ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

सावन-भादों संवत् नानकशाही ५५७ अगस्त 2025 वर्ष १८ अंक १२

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब

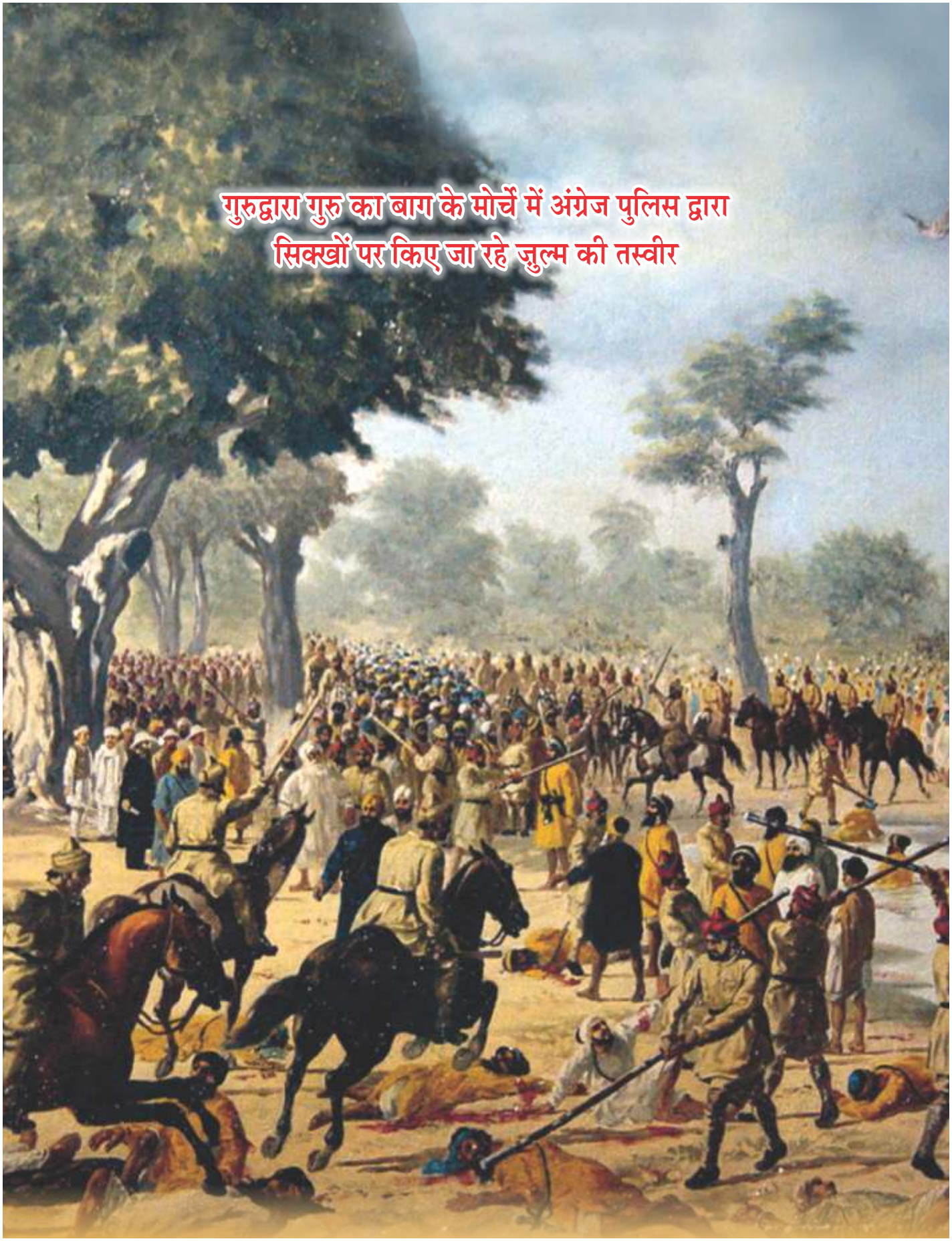

गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे में अंग्रेज पुलिस द्वारा
सिक्खों पर किए जा रहे जुल्म की तस्वीर

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

सावन–भादों संवत् नानकशाही 557
वर्ष 18 अंक 12 अगस्त 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
बाबे दा विआह : जोड़-मेला गुरुद्वारा कंध साहिब, बटाला 7
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
बुड्ढा साहिब खोलहु ग्रिंथ 10
–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ
. . . मनि जीतै जगु जीतु॥ 18
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥ 23
–डॉ. मनजीत कौर
भगउतु या भगौती या भगउती से अभिप्राय 28
–डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी
बिना शसत्र केस नरं भेड जानो। 31
–स. सतविंदर सिंघ फूलपुर
कालापानी की सेलुलर जेल में वतन की खातिर मर-मिटने वाले स्वतंत्रता सेनानी 33
–प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर
अकाली सरफ़रोशी : गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा 40
–स. गुरचरनजीत सिंघ लांबा
भारत की स्वतंत्रता में सिक्खों की भूमिका का वर्णन 45
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी राग तुखारी में 'बारह माहा' नामक बाणी की इस पावन पउड़ी में भादों मास के विशेष प्राकृतिक वर्णन के माध्यम से प्रभु-पति के नाम से बिछड़ी जीव-स्त्री की दुखदायक स्थिति का वर्णन करते हुए उसको जीवन-उद्देश्य की पूर्ति करने वाला गुरमति मार्ग दरसाते हैं ।

गुरु जी फरमान करते हैं कि भादों मास में जो जीव-स्त्री पूर्ण यौवन की आयु-स्थिति में प्रभु-पति के नाम को भूल कर भ्रम में अर्थात् माया की अज्ञानता में अर्थात् यौवन के अहं में फंस गई है, वह भटकन का शिकार होती है और अंतत: पछताती है। भादों में जब वर्षा हुई और जगह-जगह पानी भर गया, इस दृश्य का वह आनंद अनुभव कर सकती थी, परंतु वो यह आनंद प्राप्त न कर सकी। कहने से तात्पर्य, प्रकृति का प्रत्येक रूप अपने आप में सुंदर है जो जीव-स्त्री को सृष्टि-निर्माता के सदास्थिर रहने वाले नाम के साथ जोड़ने में सक्षम है।

गुरु जी इस मास का प्राकृतिक वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि काली रात्रि में भी वर्षा होती है परंतु प्रभु-पति से बिछड़ी जीव-स्त्री इस वर्षा से मिलने वाला सुख क्यों लेगी? तब मेंढक गुड़ें-गुड़ैं की आवाज़ निकालते हैं, मोर कूकते हैं, बबीहा प्रिउ-प्रिउ उच्चारण करता है। यह सब प्रभु-पति से बिछड़ी जीव-स्त्री को आनंद दिए बिना ही घटित हो जाता है। उसको तो भादों मास में सांप व मच्छर के डंक मारने का ही अनुभव होगा। यह वास्तविकता है कि सांप व मच्छर आदि के डंक इस बहार में अधिक तीक्ष्ण हो जाते हैं। जल-स्रोत भर जाते हैं। प्रभु-पति से बिछड़ी जीव-स्त्री प्रभु-पति के बिना इस दृश्य का सुख नहीं ले सकती।

गुरु जी अंत में निष्कर्ष रूप में फरमान करते हैं कि मैं जीव-स्त्री अपने सच्चे रूहानी पथ-प्रदर्शक गुरु से पूछकर, उसकी अगुआई में चलने लगे तो जहां उसे प्रभु-पति मिलेंगे वह वहीं पर ही जाएगी ।

संपादकीय

बाणी गुरू गुरू है बाणी . . .

आज का मानव प्रकृति में घटित हो रही छोटी-बड़ी तमाम घटनाओं को आसानी से समझने में सक्षम हो चुका है। इस बौद्धिक चेतना का श्रेय बेशक विज्ञान को भी दिया जाता है, परन्तु गुरु साहिबान ने आज से लगभग पाँच सौ पचास वर्ष पूर्व ही ब्रह्मांडीय स्तर पर घटित हो रही क्रियाओं एवं ब्रह्मांड की विशालता के प्रति जागृति पैदा कर इस सम्बंध में प्रचलित भ्रांतियों को ख़त्म करने का यत्न किया था। समाज में प्रचलित भ्रममूलक रस्मों का खंडन कर हमें स्वस्थ जीवन-जाच के धारक बनाया। ज्ञान के महान भंडार 'गुरबाणी' की रचना कर हर प्रकार के वहम-भ्रम की दीवारों को तोड़ा और स्वच्छ समाज का निर्माण किया।

हमारे पास आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत 'बाणी' के होते हुए 'बाणी' को अपना गुरु मानने वाला कोई भी सिक्ख वहम-भ्रम की दलदल में नहीं फंस सकता। गुरु साहिबान ने मानवीय जीवन में से वहम-भ्रम को दूर करने के लिए कोई कसर शेष नहीं छोड़ी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के उपदेश से वंचित मानव की बुद्धि खोखले बांस की भांति है, जिसमें से उपदेश रूपी फूँक (हवा) ज्ञान का नाद छेड़े बिना गुज़र जायेगी और गुरु के ज्ञान से विहीन मानव वहम-भ्रम के अंधकार में ही फंसा रहेगा।

संसार में फैले इन वहम-भ्रम की जब बात चलती है तो इस मानसिक कमज़ोरी के लिए प्रचार की कमी को जिम्मेदार ठहरा दिया जाता है, जबकि इसकी असल वजह 'हाथि दीपु कूए परै' वाली होती है। गुरमति के प्रचार-प्रसार हेतु शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अन्य बहुत-सी संस्थाएं, सभा-सोसायटियां अपनी-अपनी योग्यतानुसार निरंतर कार्यशील हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विशेष रूप से धर्म प्रचार लहर चलाई जा रही है।

गुरु के सिक्ख होने के नाते हमारा व्यक्तिगत फ़र्ज़ भी बनता है कि हम अधिक से अधिक गुरबाणी और गुरमति साहित्य स्वयं पढ़ें तथा अपने बच्चों में भी पढ़ने की रुचि पैदा करें। क्या आज हम इतने अचेत हो गए हैं कि हम पंथ-प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा से भी अनजान हैं? सिक्ख रहित

मर्यादा में गुरमति मर्यादा की बात करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि सिक्ख ने :

"एक अकाल पुरख के अलावा किसी देवी-देवता की उपासना नहीं करनी। . . . अपनी मुक्ति का दाता और इष्ट केवल दस गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी तथा गुरु साहिबान की बाणी को मानना। . . . जात-पाँत, छूआ-छूत, जंत्र-मंत्र-तंत्र, शगुन, तिथि, मुहूर्त, ग्रह, राशि, श्राद्ध, पित्तर, ख्याह, पिंड, पत्तल, दीया, क्रिया-कर्म, होम, यज्ञ, तर्पण, सिखा सूत, भद्दण, एकादशी, पूर्णमासी आदि के व्रत, तिलक, जनेऊ, तुलसी, माला, कब्र, मठ, मढ़ी, मूर्ति-पूजा आदि भ्रममूलक कर्मों पर निश्चय नहीं करना। गुरु-स्थान के अलावा किसी अन्य धर्म के तीर्थ या धाम को अपना स्थान नहीं मानना। पीर, ब्राह्मण, पूछना . . . आदि पर निश्चय नहीं करना।"

इन सबके बावजूद हम आज भी जात-पाँत और ऊँच-नीच के भ्रमजाल में बुरी तरह से फंसे हुए हैं। यह सब हाथ में दीया थामे हुए कुएं में गिरने वाली बात है। आज कहाँ खड़ी है हमारी मानसिक अवस्था? ऐसा लग रहा है जैसे हम अपने आप को आज भी मानवीय विकास के प्रथम पावदान पर ही खड़ा पाते हैं।

वास्तव में वहम, भ्रम, पाखंड आदि मानव की कमज़ोर मानसिकता की ही उपज हैं, जो मानव, उसके परिवार और समाज का संतुलन बिगाड़ देते हैं। इन सभी वहम-भ्रम का समाधान गुरबाणी ही है। गुरबाणी ही मानवीय चेतना को बलवान कर वहम, भ्रम, पाखंड से निजात दिला सकती है। गुरबाणी पढ़ने, सुनने और मनन करने से ही आत्मिक बल पैदा होगा और यह आत्मिक बल ही मानसिक कमज़ोरियों को दूर कर गुरमति जीवन-जाच का धारक बनने में सहायक सिद्ध होगा। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी फरमान करते है— "बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे॥" अर्थात् गुरु की बाणी ही सिक्ख का गुरु है। बाणी में आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल विद्यमान है। गुरबाणी उच्चारण करता हुआ जो गुरु का सेवक बाणी पर श्रद्धा रखता है, गुरु उस सिक्ख को निश्चित रूप से संसार-समुद्र से पार लगा देते हैं।

आओ! श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रथम प्रकाश दिवस के अवसर पर यह प्रण करें कि हम गुरबाणी में दरसाए मार्ग पर चलेंगे और कोई भी ऐसा कर्म नहीं करेंगे जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी की शिक्षाओं के विपरीत हो।

बाबे दा विआह : जोड़-मेला गुरुद्वारा कंध साहिब, बटाला

*–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल **

भारतीय दर्शन परम्परा में गृहस्थ व्यक्ति को सदैव से दूसरे दर्जे का प्राणी माना जाता रहा है। विभिन्न मतों-सिद्धांतों में गृहस्थी को माया के बंधनों में जकड़ा जीव माना गया है और स्वीकार किया गया है कि मुक्ति की साधना के लिए वैराग्य और संन्यास श्रेष्ठ हैं। श्री गुरु नानक देव जी के यहाँ गृहस्थी को पहली बार वास्तविक आदर-सम्मान प्राप्त हुआ। गुरमति के अनुसार किरत-कमाई करके अपना और अपने परिवार का पालन करने वाला गृहस्थी ही सर्वोच्च पद का अधिकारी है। यही कारण है कि श्री गुरु नानक देव जी ने गृहस्थ अपनाकर जीवन-निर्वाह करने को अनिवार्य करार दिया।

गृहस्थ जीवन को इतना महत्व मिलने के कारण ही सिक्ख संगत में श्री गुरु नानक देव जी के विवाह की वर्षगाँठ को 'बाबे दा विआह' नामक पर्व के रूप में बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। परंपरा के अनुसार गुरु जी का विवाह सम्वत् १५४४ बिक्रमी अर्थात् सन् १४८७ ई. में जिला गुरदासपुर के गाँव 'पक्खो के' (पक्खों के रंधावे) के श्री मूलचंद एवं माता चंदो की सुपुत्री (माता) सुलक्खणी जी के संग बटाला में हुआ। इस 'विवाह दिवस' की याद में अगस्त/सितम्बर माह में भादों सुदी ७ को बटाला शहर में एक जोड़-मेला आयोजित किया जाता है। इस उत्सव को 'बाबे दा विआह' कहा जाता है।

विवाह के समय आयु : श्री गुरु नानक देव जी की विवाह के समय आयु 'भाई बाले वाली जन्म साखी' में १८ वर्ष लिखी गई है। ज्ञानी गिआन सिंघ कृत 'तवारीख गुरू ख़ालसा' में भी गुरु जी की विवाह के समय आयु १८ वर्ष ही मानी गई है। सिक्ख परंपरा के अनुसार गुरु जी का विवाह संवत् १५४४ (१४८७ ईस्वी) में संपन्न हुआ था।

पुरोहित को योग्य कन्या की खोज में भेजना : जब श्री गुरु नानक देव जी युवा हुए तो पिता श्री महिता कलिआण चंद जी ने अपने कुल के पुरोहित को बुलाया और पुत्र के लिए योग्य कन्या की खोज करने के लिए कहा। तब गुरु जी सुलतानपुर लोधी में रह रहे थे। बाबा सरूप दास के शब्दों में . . .

तब कालू प्रोहत को कहा,

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

तुम जाहु कुटंब कंनिआ हो जहां।
नानक जी की होइ सगाई,
तब करै बिआह कहै सभ भाई।

पुरोहित योग्य कन्या की खोज में रावी नदी के पूरबी किनारे पर स्थित गांव 'पक्खो के रंधावे' पहुंच गया। यह गांव आजकल ज़िला गुरदासपुर में है। यहां के पटवारी श्री मूलचंद और माता चंदो जी की पुत्री माता सुलक्खणी जी के साथ सगाई तय कर आया।

स्थानीय परंपरा के अनुसार माता सुलक्खणी जी अपने माता-पिता की इकलौती संतान थीं। माता सुलक्खणी जी का जन्म गांव 'पक्खो के रंधावे' में हुआ था। माता सुलक्खणी जी के जन्म के विषय में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती।

विवाह नियत होना : पटवारी श्री मूलचंद का भाई और इनका पुरोहित गाँव राय भोय की तलवंडी गये और श्री गुरु नानक देव जी की कुड़माई (मँगनी, रिश्ता) करके विवाह का दिन नियत कर आये।

'मिहरबान वाली जन्म साखी' में वर्णन है :—

"तब गुरू बाबे नानक जी की कुड़माई आई वटाले तों, मूलै चोणै भेजी कुड़माई बेटी दी कालू वेदी दे पुत्र नो, नानक कउ कुड़माई, वैसाखी दे दिनि कुड़माई आई संमत १५४२ वरखे माहु वैसाख वदी १ एकम कै दिनि, नलीएरु रुपया कटोरा मूलो चोणे भेजिआ, मूलो चोणे दे पुरोहति गुरू बाबे नानक जी दी पाइआ नलेर नाले, गुरू बाबे जी का पितीअहुरा था नाले, साहा गणाइ कै वीवाहु दे गइआ परोहतु चोणिआ का।"

गुरु पातशाह का विवाह : कुड़माई के समय नियत हुआ कि बारात बटाला आयेगी। बटाला पटवारी श्री मूलचंद का पैतृक गांव था। 'पक्खो के' यहां से २० मील या ३०-३२ किलोमीटर दूर है। गुरु जी का विवाह बटाला में ही हुआ था। सभी जन्म-साखियों और सिक्ख ऐतिहासिक स्रोत इस बात पर सहमत हैं।

बटाला में जिस स्थान पर गुरु जी की बारात आकर ठहरी थी, वहां अब 'गुरुद्वारा कंध साहिब' शोभायमान है। यहां एक कच्ची दीवार का अवशेष है, जिसे शीशे में मढ़ दिया गया है। यह दीवार गुरु साहिब के समय की ही है। रिवायत है कि जब यहां गुरु जी की बारात आकर ठहरी तो एक कच्ची व जीर्ण दीवार के निकट बिछे पलंघ पर गुरु जी दूल्हा सजे बैठे थे। एक बूढ़ी माई ने कहा कि "पुत्र! इस जीर्ण दीवार से बच कर रहना, कहीं ढहकर ऊपर ही न आ गिरे!" तब गुरु जी ने वचन किया कि "माई! यह दीवार कभी नहीं गिरेगी।" गुरु साहिब के वचन सदका उस प्राचीन जीर्ण दीवार का कुछ अंश आज भी उसी तरह शोभित है।

गुरु जी के विवाह की सारी रस्में श्री मूलचंद जी के घर पर ही संपन्न हुईं। जिस स्थान पर यह

घर था वहां अब 'गुरुद्वारा डेहरा साहिब' सुशोभित है।

विवाह के पश्चात माता सुलक्खणी जी स्वाभाविक रूप से अपनी ससुराल राय भोय की तलवंडी में आ गए। समय-अंतराल पर यहां माता सुलक्खणी जी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। सन् १४९४ ईस्वी में बाबा श्रीचंद जी का और सन् १४९७ ईस्वी में बाबा लखमी दास जी का जन्म हुआ। माता सुलक्खणी जी ने बड़ी ममता से पुत्रों का लालन-पालन किया।

सन् १४९७ ईस्वी में श्री गुरु नानक देव जी ने लोक-कल्याण हेतु 'उदासियां' करने का निर्णय लिया। माता सुलक्खणी जी ने पति की आज्ञा शिरोधार्य करके परिवार की देखभाल का कार्य संभाला। माता सुलक्खणी जी ने सन् १५२२ ईस्वी में गुरु जी की वापसी तक सुल्तानपुर लोधी में ही रहकर, बेबे नानकी जी के साथ मिलकर परिवार का लालन-पालन और भरण-पोषण किया।

चारों उदासियां संपूर्ण करके जब श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर को अपना कर्म-स्थल बनाया तो माता सुलक्खणी जी भी सेवा में सहभागी बने। यहां माता जी अंत समय तक गुरु जी के साथ रहे।

लोक-कल्याण के लिए जिन महापुरुषों और सांस्कृतिक महानायकों ने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया, उनके जीवन और महान कार्यों में उनकी धर्मपत्नियों का योगदान भी कुछ कम नहीं है। महापुरुषों की ये सहधर्मणियां अधिकांशत: अल्पज्ञात ही रह गईं, परंतु लोक-कल्याण में इनकी भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी, जितनी इनके महापुरुष पतियों की रही है। जगत्-उद्धारक, महान गुरु श्री गुरु नानक देव जी की सुपत्नी माता सुलक्खणी जी भी एक ऐसी ही महान् नारी हैं जिन्होंने पृष्ठभूमि में रहते हुए गुरु जी के लोक-कल्याणकारी कार्यों में उत्कृष्ट सहयोग किया।

"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान" महावाक्य पर पहरा देते हुए श्री गुरु नानक देव जी माता सुलक्खणी जी का बहुत आदर किया करते थे।

यही कारण है कि श्री गुरु नानक देव जी और माता सुलक्खणी जी के विवाह का यह उत्सव 'बाबे दा विआह' के जोड़-मेले के रूप में आज भी बटाला शहर में प्रत्येक वर्ष अगस्त-सितंबर महीने में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

बाद में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी का 'अनंद कारज' भी शहर बटाला में ही संपन्न हुआ था। उस स्थान पर अब 'गुरुद्वारा सतिकरतारिआं साहिब' सुशोभित है।

बुड्ढा साहिब खोलहु ग्रिंथ . . .

*–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ**

सिक्ख धर्म में 'सबद-गुरु' के सिद्धांत की स्थापना किसी प्रमाण या पुष्टि की मुहताज नहीं। बेशक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री आदि ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी प्रदान की, परंतु 'सबद' (शबद) की 'गुरु' रूप में प्रतिपादन तो प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के समय में ही हो गया था :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४३)

एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि धर्म-चिंतन के स्तर पर 'सबद', कोश-विज्ञान से ऊपर उठ कर एक रहस्यमयी घटनाक्रम है। सिक्ख धर्म में 'सबद' को 'खसम की बाणी' कह कर उपमा की गई है। 'सबद' का बाणीकारों ने पहले स्वयं अनुभव किया, फिर उस अनुभव को 'बाणी' के माध्यम से प्रकट किया :

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२२)

वर्णनीय है कि 'गुरबाणी' और 'बाणी' दोनों शब्द 'सबद' के अर्थों में ही प्रयुक्त हुए हैं। ऐतिहासिक तौर पर श्री गुरु नानक देव जी ने 'वेईं प्रवेश' के बाद 'सबद' का प्रवाह चलाया। गुरु साहिब उदासियों (प्रचार-यात्रा) के दौरान जहाँ भी गए, 'सबद' की बरकत द्वारा लोक-कल्याण किया। 'सबद' की अपार शक्ति के हवाले के साथ 'जन्मसाखी साहित्य' में अनेक साखियों का ज़िक्र आता है, जिनसे सिद्ध होता है कि गुरु साहिब ने 'सबद' की शक्ति से अनेक व्यक्तियों का उद्धार किया। इस सम्बंध में सबसे पहली साखी शेख सज्जन (सज्जन ठग) वाली है, जिसका जन्मसाखी में वर्णन इस प्रकार है :—

". . . जब रात पई तबि आखिओसु : उठहु जी सोवहु। तबि बाबे आखिआ, सजणे! इकु सबदु खुदाइ दी बंदगी का आखि करि सोवहिगे। तबि सेख सजनि आखिआ : भला होवै जी आखहु जी राति बहुतु गुज़रदी जांदी है। तउ बाबे आखिआ मरदानिआ ! रबाबु बजाइ। तां मरदाने रबाबु वजाइआ। राग सूही कीती। गुरू नानक सबदु उठाइआ। . . . तब दरसन का सदका बुधि होइ आई। जां वीचारे तां सभ

* सहायक प्रोफ़ेसर (धर्म अध्ययन), यूनिवर्सिटी कॉलेज, मीरांपुर (पटियाला)–१४७१११, फोन : ९९८८०-०४७३३

मेरे गुनाह सही होइ हैनि। तबि आइ उठि करि पैरी पइआ पैरि चुंमिओस।. . . "[१]

सिक्ख धर्म में अकाल पुरख, गुरु और सबद एक-दूसरे के पूरक नहीं, बल्कि एक ही रूप हैं। अकाल पुरख भी सबद-रूप है, बाणी भी सबद का ही रूप है और गुरु भी सबद-स्वरूप है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ज़िक्र आता है कि पारब्रह्म ने 'अपना आप' 'गुरु' में समा कर 'सबद-गुरु' का पसार किया :

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२७९)

'सबद' एक रहस्यमयी सिद्धांत है, जिसके अधीन 'सबद', गुरु/पीर का दर्जा रखता है :

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३५)

गुरबाणी में 'सबद' की व्याख्या कई अर्थों में हुई है। प्रमुखत: 'सबद' को 'ईश्वरीय सदि' (सदा, आवाज) के रूप में पेश किया गया है :

पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि॥
खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े॥
जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८९)

इस लेख में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब में प्रथम प्रकाश के बारे में चर्चा की जा रही है। इस उद्देश्य से सबद-गुरु की पृष्ठभूमि सृजित कर श्री आदि (गुरु) ग्रंथ साहिब की सम्पादना का विवरण दिया गया है। उपरांत श्री हरिमंदर साहिब में श्री आदि ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश से सम्बन्धित गुरमुखी स्रोतों के हवाले सहित विचार किया गया है। लेख के अंत में श्री आदि ग्रंथ साहिब की गुरगद्दी और सिक्ख व्यवहार में भूमिका का वर्णन है।

श्री गुरु नानक देव जी की 'युक्ति' के अधीन नानक-ज्योति के चौथे स्तंभ श्री गुरु रामदास जी ने अमृत सरोवर तैयार करवाया। 'महिमा प्रकाश' ने इस सरोवर को 'मुक्तक्षेत्र' की संज्ञा दी है,[२] जहाँ से सामाजिक तौर पर लोगों की मुक्ति होती है। गुरु साहिब ने अपने दैवी मिशन के अधीन लोगों का आपसी विभाजन दूर करने के लिए जल को 'बावली' के बाद 'सरोवर' रूप में इस्तेमाल किया। गुरबाणी के दिशा-निर्देश "पहिला पाणी जीउ है . . ." के अनुसार गुरु साहिब ने मानव की प्राथमिक आवश्यकता (जल) को प्रचार का माध्यम बनाया। इसके पीछे लोगों के मन में से जाति की पवित्रता-अपवित्रता दूर करने की दूरदृष्टि कार्यशील थी। 'महिमा प्रकाश' का कर्ता बताता है कि दयालु सतिगुरु श्री गुरु रामदास जी ने अमृत सरोवर की खुदाई करने के लिए संगत को हुक्म किया और कहा कि जो

भी प्राणी सरोवर-खुदाई की सेवा करेगा, उसे मनोकांक्षित फल की प्राप्ति होगी :

. . . आगिआ कीनी सतिगुर दइआल।
यह धरम छेत्र खोदो तुम ताल॥
जो खोदे मन प्रीत बढाइ।
जो चितवै सोई फल पाइ॥[३]

श्री गुरु रामदास जी द्वारा सरोवर की खुदाई के आरंभ किये गए कार्य को श्री गुरु अरजन देव जी ने बाधारहित सम्पूर्ण किया। श्री गुरु अरजन देव जी 'दुख भंजनी बेरी' के नीचे बैठ कर सरोवर की चल रही सेवा की निगरानी किया करते थे :

आप खरे हुइ सभिनि मझारी। कार करावहि गुर उपकारी॥
देखति कार चौगुनी होइ। उदम करहि अधिक सभि कोइ॥[४]

ज्ञानी गिआन सिंघ सरोवर की सुंदरता बयान करते हुए कहते हैं कि गुरु साहिब ने यह ऐसा सरोवर बनाया, जिसके तुल्य कोई और नहीं :

तीरथ आहि अमीसर पावन ताहि खुदावन की दिढधारे।
राज मजूर लगाइ रखे बहु संगत कार कढाइ अपारे।
तिआर पजावे करे गुरु सिखन छोड गिलान करी अतिकारे।
ताल बिसाल सुपान रची जिस के सम और नही जग सारे॥[५]

बाणी और पानी का आध्यात्मिक सम्बन्ध है। सरोवर में 'हरिमंदर' बनावा कर, श्री आदि (गुरु) ग्रंथ साहिब का प्रकाश करना पूर्वनिश्चित था, इसलिए सरोवर की खुदाई के बाद श्री गुरु अरजन देव जी ने सरोवर में एक सुंदर 'हरिमंदर' बनवाया। 'हरिमंदर' के चार दरवाज़े रखे गए, ताकि चारों दिशाओं से चारों वर्णों के लोग बेरोक दर्शनार्थ आ सकें। गुरबाणी में 'हरिमंदर' की उपमा गुरु साहिब ने ख़ुद भी की है :

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ॥
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ॥
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६२)*

'गुरबिलास पातशाही ६' के अनुसार, श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब एक जहाज़ के समान है, जो जीवों को भवजल पार करवाने में सक्षम है :

श्री दरबार की उपमा उचारी।
इह सम नही त्रिलोकी सारी॥५॥
सम जहाज़ बनि है दरबारा।
तरैं जीव भवसिंधु अपारा।[६]

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब 'हरि'

(परमात्मा) का प्रत्यक्ष स्वरूप है। यहाँ आने वाले मानव के सब प्रकार के दरिद्र समाप्त हो जाते हैं :

परतख रूप रामदास का सोभत श्री दरबार॥. . .
जोऊ सरनि इह की परै दारिद्र रहै न काइ॥[७]

श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना के पश्चात् श्री गुरु नानक देव जी के 'पंथ' सृजित करने के मिशन के अंतर्गत श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब में श्री आदि ग्रंथ साहिब का प्रकाश करने की योजना बनाई। भाई अलमस्त के प्रसंग में 'महिमा प्रकाश' का कर्ता 'ग्रंथ' रचने का संकेत इस तरह देता है :

तब पूछी मोहन मसत प्रबीना।
कवन काज आगमन कीना॥
तब कहिओ प्रगटि प्रभ धरम अरचना।
कारन पंथ ग्रिंथ जग करना॥[८]

'गुरबिलास पातशाही ६' के कर्ता के अनुसार :

गुर अरजन मनि ऐसे धारयो।
करों जतन जिह जग निसतारयो॥
बाणी गुरू गुरू है बाणी।
बेदन ततु मथि बुधि मधाणी॥ ३॥
चहु खट नौ का सार निकारा।
गुर नानक बाणी विसथारा।
दस महलां तक रूप हमारे।
आगे पूजा किह निसतारे॥ ४॥
ता ते सभ बाणी इकठय्यै।
पूजनीव गुर ग्रिंथ बनय्यै।. . .[९]

श्री आदि ग्रंथ साहिब की संरचना करने की योजना बना कर श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी को बाणी गुरमुखी अक्षरों में लिखने के लिए प्रेरित किया :

तब श्री गुर अस मुखों उचारे।
गुरदास भाई सुनीए निरधारे॥ ३४९॥
रचो बीड़ तुम ग्रिंथ अपारा।
गुरमुखी अक्खर माहि सुधारा।
मै भाखों तुम लिखो बनाए।
चतुर गुरू बाणी सुखदाए॥ ३५०॥[१०]

श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १६०१ ई. में श्री आदि ग्रंथ साहिब की सम्पादना का कार्य आरंभ किया। यहाँ संपादन-इतिहास देना लेख की सीमा में नहीं, जिस कारण इस बाबत केवल इतना ही कहा जा सकता है कि श्री गुरु अरजन देव जी ने बड़ी दूरदृष्टि और सूझबूझ के साथ इस कार्य को सम्पूर्ण किया। कवि भाई संतोख सिंघ ने श्री आदि ग्रंथ साहिब के संपादन-कार्य को अति भावपूर्ण शब्दों में पेश किया है। उनके अनुसार, श्री आदि ग्रंथ साहिब की सम्पादना के पश्चात् गुरु साहिब ने बैठ कर भारी दीवान लगाया, जिसे देख कर सिक्ख संगत के मन में बड़ा प्रेम उत्पन्न हुआ। दीवान में श्री आदि ग्रंथ साहिब का स्वरूप सुशोभित

किया गया, जिस पर सेवादार सुंदर चँवर झुलाने लगे। श्री आदि ग्रंथ साहिब का स्वरूप जब दीवान में सजाया गया तो सिक्ख संगत ने रंग-बिरंगे फूलों के गुलदस्ते बना कर श्री आदि ग्रंथ साहिब के सम्मुख सजाए। फूलों की माला बना कर श्री आदि ग्रंथ साहिब के स्वरूप पर सुशोभित की। सुगंधित पदार्थों (केसर, चंदन और धूप) आदि से श्री आदि ग्रंथ साहिब का प्रकाश-स्थान महक उठा। सिक्ख संगत श्री आदि ग्रंथ साहिब के प्रकाश की ख़ुशी में शंख बजाने लगी। प्रेम-भाव में आसक्त संगत की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। इस दृश्य को कवि भाई संतोख सिंघ ने इस प्रकार पेश किया है :

पुन श्री गुर बैठि दिवान लग्यो।
गन सिक्खय पिखैं मन प्रेम पग्यो।
सभि बीच सुहावति ग्रिंथ धरयो।
करि सेवक सुंदर चौर फिर्यो॥ १५ ॥
लगि ढेर प्रशादि गयो सु तहां।
बहु लयावति सिक्ख अनंद महां।
शुभ फूलनि माल बिसाल करे।
बहु रंगनि के बिच गुंफ धरे॥ १६ ॥
गर श्री गुर के सिख पावति हैं।
बहु भांतिन फूल चढावति हैं।
सुभ माल सु फूल बिसाल लए।
गुरू ग्रिंथ समीप चढाइ दए॥ १७ ॥
बहु धूप सु आगि धुखावित हैं।
घसि चंदन केसर पावति हैं॥
चरचैं अरचैं सिख प्रीत धरैं।
गन संख बजावति फूक भरैं॥ १८ ॥
अरदास प्रसादनि ब्रिंद करैं।
जयकार सभै इक बार ररैं॥
करि धारि रबाब सतार बजै।
सबदानि सु गाइ सु राग सजै॥ १९ ॥[११]

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री रामसर साहिब नामक स्थान पर बैठ, एक दिन भरे दीवान में श्री आदि ग्रंथ साहिब के प्रति प्रशंसा भरे वाक्य उच्चारण करते हुए कहा कि श्री आदि ग्रंथ साहिब मानव को संसार रूपी सागर से पार उतारने वाले जहाज़ हैं, जो भी जिज्ञासु मन लगा कर गुरबाणी पढ़ेगा, वह सहज ही मुक्ति प्राप्त कर सकेगा। श्री आदि ग्रंथ साहिब गुरु साहिबान का हृदय हैं। इसी कारण इनके दर्शन सबसे उत्तम हैं, जो हर समय-स्थान पर सभी को हो सकते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने शारीरिक दर्शन से कहीं अधिक श्री आदि ग्रंथ साहिब के दर्शन करने के लिए संगत को प्रेरित किया :

'ग्रिंथ' जहाज़ सु भौजल को तर जाति सुखेन जिनी चित लायो॥ ४ ॥
श्री गुर केर सरीर जुऊ सभि थान समै सभि ना दरसै हैं।
ग्रिंथ रिदा गुर कोर इह जानहु उत्तम है सभि

काल रहै है।

मेरे सरूप ते यांते है दीरघ साहिब जानि अदाइब कै है।...[१२]

श्री गुरु अरजन देव जी ने अगले दिन बाबा बुड्ढा जी को अमृत बेला में श्री हरिमंदर साहिब में श्री आदि ग्रंथ साहिब का प्रकाश कर 'हुक्म' लेने के लिए कहा, ताकि सारा पंथ श्री आदि ग्रंथ साहिब का पहला 'मुखवाक' श्रवण कर सके। बाबा बुड्ढा जी ने बड़े अदब के साथ श्री आदि ग्रंथ साहिब का प्रकाश करते हुए सूही राग मंा आया फरमान संगत को सुनाया। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के कर्ता भाई संतोख सिंघ उस दृश्य को इस तरह पेश करते हैं :

'बुड्ढा साहिब खोलहु ग्रिंथ।
लेहु अवाज़ सुनहि सभि पंथ' ॥ ३२ ॥
सुनि गुर बचन रुचिर मनलायक।
सत्त बाक मुख जलज अलाइक।
अदब संग तबि ग्रिंथ सु खोला।
ले अवाज़ बुड्ढा मुखि बोला ॥ ३३ ॥

सूही महला ५ ॥

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥
पूरन पुरखु अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ १ ॥[१३]

दिन भर श्री आदि ग्रंथ साहिब का स्वरूप श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाशमान रहने के बाद रात के समय बाबा बुड्ढा जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की आज्ञा से 'सोहिला साहिब' का पाठ कर श्री आदि ग्रंथ साहिब का स्वरूप सुख-आसन किया :

श्री गुर कहयो प्रभू दरबारा।
ग्रिंथ प्रमेशुर को अवतारा।
डेढ जाम जामनि जबि जाइ।
पठहिं सोहिला किरतन गाइ ॥ ४३ ॥
बहुरो ले जावहु असवारा।
जिसी कोठरी रहनि हमारा।
तहां निवास करहु जुत मान।
जाम डेढ जामनि रहि आन ॥ ४४ ॥[१४]

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक चला गुरगद्दी का क्रम, अंतत: 'सबद' की 'गुरु' के तौर पर स्थापित पर समाप्त होता है। यह समूचा दैवीय क्रम वास्तव में 'सबद-गुरु' की ही परंपरा है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'सबद' को गुरगद्दी देकर 'वैयक्तिक

गुरु' का वजूद सदा के लिए ख़त्म कर दिया। ज़िक्रयोग्य है कि श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही 'गुरु-ज्योति' की प्रधानता रही है। श्री गुरु नानक देव जी के शेष नौ उत्तराधिकारियों ने भी 'सबद' , 'बाणी' , 'गुरबाणी', 'वचन' आदि को 'गुरु' के तुल्य ही दरसाया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रत्यक्ष रूप से 'ग्रंथ-पंथ' को गुरगद्दी देकर दृढ़ करवा दिया कि पंथ के हजूर 'सबद' ही गुरु है।

सबद-गुरु के आध्यात्मिक सफ़र में 'आदि बीड़' की सम्पादना ने ही 'सबद' की 'गुरु' के रूप में स्थापि में अहम रोल अदा किया है।[१५] श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री आदि ग्रंथ साहिब की संपादना करवाई, तत्पश्चात् दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की बाणी श्री आदि ग्रंथ साहिब में शामिल करवा कर, सम्पूर्णता प्रदान की। उन्होंने ग्रंथ-पंथ की गुरुता में अपना रूप परिवर्तित कर सिक्खों के नेतृत्व के लिए अपनी ज्योति-युक्ति को सदास्थिर कर दिया, ताकि भविष्य में गुरु- अवतरण की कभी ज़रूरत महसूस ही न हो और गुरु अपने सेवकों के सदा अंग-संग रहे। इस प्रकार हमारा विश्वास है कि नानक-ज्योति सदा के लिए ग्रंथ-पंथ में निवास कर रही है।

खालसा पंथ द्वारा रोज़ाना की जाती अरदास में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'दस पातशाहियों की ज्योति' कहा गया है।[१६]

वर्णनीय है कि सिक्खों के जीवन का हर पहलू— धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ जुड़ा हुआ है। सिक्ख के जन्म से लेकर मरण तक जितने भी संस्कार निभाए जाते हैं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में ही होते हैं। बच्चों के जन्म के समय नामकरण, विद्या संस्कार, अनंद कारज और मृतक संस्कार के पश्चात् अंतिम अरदास भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हज़ूरी में ही होती है। दुख के समय आत्मिक शान्ति हेतु सिक्ख गुरु-घर जाकर अरदास करता है, जिससे उसके दुख की निवृत्ति होती है। सिक्खों का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ प्रेम किस कद्र है, इसका अंदाज़ा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जंगों-युद्धों के समय जब सिंघ अपना घर-बार छोड़ कर जंगलों में रह रहे थे, उस समय भी उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपने से दूर नहीं किया। जंगों-युद्धों के दरमियान जब भी उन्हें समय मिलता, श्री गुरु ग्रंथ साहिब से पाठ कर अपनी आत्मिक तृप्ति करते। इस तथ्य की पुष्टि का एक पहलू यह भी है कि मौजूदा समय में भी कई सिक्ख अपने घर में बड़े अदब-सत्कार के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप सुशोभित करते हैं। यह

उनकी अथाह श्रद्धा और सत्कार का प्रतीक है, जिससे वे प्रात: काल एवं सायं काल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश व सुख-आसन करते हैं।

यहाँ एक बात स्पष्ट करनी आवश्यक है कि उपरोक्त पूजा-विधान किसी प्रकार की मूर्ति-पूजा नहीं है, जैसा कि कई लोग नासमझी में कह देते हैं। प्रिं. तेजा सिंघ के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब को राजसी शान-ओ-शौकत वाले चिह्नों के साथ शोभित करना मूर्ति-पूजा नहीं। सिक्खों की पूजा का केंद्र 'नाम' है।[१७] 'नाम' के बिना किसी भी वस्तु की प्रशंसा तो हो सकती है, पूजा नहीं।[१८] गुरु साहिब ने सदा यही चाहा है कि उनके सिक्ख गुरबाणी में दरसाए सिद्धांतों को अमल में लेकर आएं। ऐसी प्रक्रिया परमात्मा के साथ मिलाप करने में सहायक 'नाम' के मार्ग पर जीव को चलने के लिए प्रेरित करती है।

हवाले और टिप्पणियाँ :—

१. भाई वीर सिंघ (सम्पा.), पुरातन जन्मसाखी, साहित्य सदन, नई दिल्ली, १९९६ (छठी बार), साखी/पृष्ठ १३/ ५२-३.

२. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश (भाग दूसरा, खंड १), (सम्पा.) डॉ. उत्तम सिंघ (भाटिया), भाषा विभाग पंजाब, २००३ (दूसरी बार), ५/ १/ २९४.

३. वही, ५/ १८/ २९५.

४. भाई संतोख सिंघ, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ (जिल्द छठी), (सम्पा.) भाई वीर सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९८९, रासि/ अंसू/ पृष्ठ -२/ ३९/ १८०३.

५. ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश, भाषा विभाग पंजाब, १९८७, पृष्ठ १०९.

६. भाई भगत सिंघ, गुरबिलास पातशाही ६, (सम्पा.) ज्ञानी जोगिंदर सिंघ वेदांती डॉ. अमरजीत सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी, श्री अमृतसर साहिब १९९८, अध्याय/ बन्द/ पृष्ठ -५/ ५-६/ १२०.

७. वही, ५/ ७-८/ १२०.

८. महिमा प्रकाश (भाग दूसरा, खंड III), पृष्ठ ३४९.

९. गुरबिलास पातशाही ६, अध्याय/ बन्द/ पृष्ठ -४/ ३-४/ ५६.

१०. वही, ४ / ३४९ -५० / ९०.

११. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ (छठी जिल्द), रासि/ अंसू/ पृष्ठ -३/ ४९/ २१३५.

१२. वही, ३/ ५०/ २१४०.

१३. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ (छठी जिल्द), रासि/ अंसू/ पृष्ठ -३/ ५०/ २१४३.

१४. वही, ३/ ५०/ २१४४.

१५. श्री ग्रंथ साहिब के संपादन-इतिहास का ज़िक्र यहाँ नहीं किया जा रहा।

१६. सिक्ख रहित मर्यादा, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, पृष्ठ १०.

१७. बिनु नावै होर पूज न होवी. . . ॥ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९१०.

१८. Teja Singh, Sikhism : Its Ideals and Institutions, Khalsa Brothers, Sri Amritsar Sahib, 1970 (V) P. 101.

. . . मनि जीतै जगु जीतु ॥

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

संसार परमात्मा की अत्यंत रहस्यमयी रचना है। यह विशाल है, व्यापक है और विभिन्नताओं से भरा हुआ है। परमात्मा की रची रचनायें निर्जीव भी हैं और सजीव भी हैं। जीव चौरासी लाख प्रकार के हैं, जिनमें से बयालीस लाख प्रकार के जीव धरती पर और शेष बयालीस लाख प्रकार के जीव जल में विचरण करते हैं। इन जीवों में मनुष्य को सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना होने का गौरव प्राप्त है। मानव जीवन दुर्लभ भी है क्योंकि यह विभिन्न योनियों में भ्रमण करते हुए किये गये पुण्य कर्मों से ही प्राप्त होता है। यह दुर्लभ होने के साथ ही सुखद भी है। अन्य जीवों की अपेक्षा मनुष्य की शारीरिक और बौद्धिक क्षमतायें कहीं अधिक हैं जिससे उसका जीवन स्तर सर्वश्रेष्ठ बन सका है। जंगल के वृक्षों से नगर की ऊंची अट्टालिकाओं तक का सफर उसने अपने कठोर परिश्रम और बुद्धि-बल से तय किया है। उसने अपनी सुख-सुविधा के सारे साधन जुटाये हैं और निरंतर इस प्रयास में लगा हुआ है। मनुष्य दिन-रात प्रयासरत रहता है, क्योंकि वह कभी तृप्त ही नहीं होता है। हर परिश्रम का फल उसे अंततः सुख की अनुभूति के रूप में चाहिये। सुख प्राप्त होता भी है किन्तु स्थिर नहीं होता। संसार में कोई ऐसा नहीं है जिसे सुख नहीं चाहिये :

सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५७)

दुख की इच्छा रखने वाला कोई नहीं है। सभी सुख-प्राप्ति के लिये अपने-अपने ढंग से प्रयत्न कर रहे हैं। सुख प्राप्त होता है किन्तु समयांतर पुनः दुख घेर लेता है जिससे सुख की अनुभूति लुप्त हो जाती है। मनुष्य परिवार में, संतान में, धन–संपत्ति में, पदार्थों में, पद-प्रतिष्ठा में सुख खोज रहा है। वास्तव में ये सुख नहीं हैं, बंधन हैं। श्री गुरु नानक साहिब ने जल में निवास करने वाली मछली का उदाहरण दिया है जो मिथ्या लोभ और विश्वास के कारण मछुआरे के फेंके हुए जाल में फंस जाती है और अपने जीवन से हाथ धो बैठती है। संसार में माया ने अपना प्रभाव डाला हुआ है।

**ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

परिवार, कुल, धन-संपत्ति, पदार्थ, पद-प्रतिष्ठा आदि सभी माया के ही रूप हैं। माया से मोहित हो जाना और उसकी लालसा करना सुख का भ्रम उत्पन्न करता है, किन्तु यही दुख का कारण भी बनता है :

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥
जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३७०)

मनुष्य माया के आकर्षण में बंध कर मोह लगा लेता है। माया में उसे सभी सुख दिखने लगते हैं। उसे लगता है कि परिवार होगा तो उसे अपार सहयोग प्राप्त होगा, जिससे सुख उत्पन्न होगा। वह परिवार के मोह में कुछ भी नीति-अनीति करने को तत्पर हो जाता है, जबकि वही परिवार प्राय: उसके दुख का कारण बन जाता है। सबसे घातक परिवार के ही विवाद होते हैं, जिनसे मनुष्य की प्रतिष्ठा ही नहीं, सुख-शांति भी दांव पर लग जाती है। इतिहास में इसके बड़े से छोटे तक उदाहरण मिल जायेंगे। पारिवारिक विवादों ने बड़े-बड़े राज्य मिटा दिये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा है कि परिवार ही नहीं, समस्त संबंध ही स्वार्थ पर टिके हुए हैं। स्वार्थ सिद्ध नहीं होता तो मधुर संबंध विष बन जाते हैं। मनुष्य के सर्वाधिक निकट उसकी पत्नी होती है, किन्तु वह भी अंतत: साथ छोड़ देती है— *"जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी॥"* विडंबना यह है कि उदाहरण सामने होते हुए भी परिवार के मोह से उबरना संभव नहीं होता। धन–संपदा भी माया का ही रूप है। मनुष्य को धन और संपत्ति के संग्रह में अपनी सुरक्षा दिखती है। अधिकाधिक धन-संग्रह के लिये पाप करने में भी उसे संकोच नहीं होता। यह धन सुख से अधिक दुख देता है। धन की लालसा कभी कम नहीं होती, जिससे मन अस्थिर रहता है। धन सहेज कर रखने की चिंता और धन के नष्ट हो जाने का भय भी सदैव दुख देता रहता है। इसी प्रकार पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि व उसे बनाये रखने की कामना भी सुख से अधिक दुख उत्पन्न करती है। माया के मोह में भटक रहे मनुष्य की अवस्था व्यथित करने वाली होती है :

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥रहाउ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४११)

माया के मोह में मनुष्य की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा है कि उसकी अवस्था उस कुत्ते जैसी

हो जाती है जो दुत्कारा जाता है, फिर भी भोजन की आशा में द्वार-द्वार भटकता रहता है। कहीं से कुछ प्राप्त हो जाये इस कामना से वह अपना स्वाभिमान त्याग कर किसी की भी चाकरी करने को तैयार हो जाता है और दुख उठाता है। लोभ उसके जीवन को स्थिर नहीं होने देता। वह दसों दिशाओं में भटकता रहता है अर्थात् सदैव अनिश्चितता में डूबा रहता है।

मनुष्य का जीवन-ढंग ही मूलत: दोषपूर्ण है। वह सुख के लिये बाहर भटक रहा है। उसे ज्ञात ही नहीं है कि सुख क्या है और कहां से प्राप्त होना है। श्री गुरु अमरदास साहिब ने कहा है कि सुख और सुखनिधान तो उसके अंदर ही है :

अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥
गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११२)

सबसे मूल्यवान धन तो मनुष्य के मन में ही परमात्मा ने संचित कर दिया है। उससे अधिक मूल्यवान संसार में कुछ भी नहीं है। मनुष्य अपने मन के निकट कभी गया ही नहीं है। अपने मन का संग उसने कभी किया ही नहीं है। उसे माया की बेड़ियों ने जकड़ रखा है। सुख की खोज में वह पूरा संसार एक कर रहा है किन्तु फिर भी सुख नहीं है। सच्चा सुख उसके मन में है जिसका उसे ज्ञान ही नहीं है। उसे सच्चे सुख की परख ही नहीं है। अपने मन को जानने के लिये उसके निकट जाना पड़ता है। ध्यान माया से तोड़ कर मन के संग जोड़ना पड़ता है। मन के निकट जाने की विधि गुरु से ही प्राप्त होती है। किसी की निकटता प्राप्त करने, उससे संबंध स्थापित करने का आरंभिक चरण है— उसके साथ संवाद स्थापित करना। मनुष्य दिन भर दूसरों से वार्ता कर सकता है, संदेशों का आदान-प्रदान कर सकता है, किन्तु अपने मन के साथ बात करने का उसके पाससमय ही नहीं है। उसे आश्चर्यजनक लगेगा कि क्या अपने मन से भी बात की जा सकती है। मन तो माया और विकारों का बंदी बना हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मन और तन को अलग-अलग कर देखा गया है। मनुष्य तन के सुख हेतु मन को भ्रमित करता है। पाप तन करता है किन्तु दंड मन को भोगना पड़ता है। जीवन में दुख हैं तो इसका मुख्य कारण मन का विकारों और माया के बंधन में जकड़े होना है। मनुष्य मन की व्यथा समझ ही नहीं पाता है, सुखों के लिये भागता रहता है। गुरबाणी प्रेरित करती है कि मनुष्य अपने मन के मूल को पहचाने :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४१)

मनुष्य अपने मन के साथ संवाद करे कि तुम तो परमात्मा का अंश हो। तुम्हें शक्ति और

सामर्थ्य तो परमात्मा से प्राप्त हो रहा है। परमात्मा तुम्हारे अंदर प्रकाशित हो रहा है। मन परमात्मा का ही रूप है तो माया और विकारों से उसके प्रकाश को बाधित करने से बड़ी अज्ञानता और मूर्खता क्या होगी! मन में बस रहे परमात्मा के प्रकाश से जीवन को प्रकाशित करने से बड़ा सुख और क्या हो सकता है! मन में परमात्मा की ज्योति ही वह अमूल्य निधि है जिसकी उपमा श्री गुरु अमरदास साहिब ने हीरा और लाल के रूप में दी है। परमात्मा जो सारे सुखों का दाता है— "सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ॥" तो सुखों के लिये बाहर भटकने का क्या अर्थ है? मनुष्य मन के साथ बैठे, मन में परमात्मा की जल रही ज्योति का प्रकाश बाहर आने दे अर्थात् अपनी बुद्धि, ज्ञान और कर्मों में धारण करे। वह इसका संकल्प करे :

मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३८)

गुरसिक्ख परमात्मा में दृढ़ विश्वास धारण करे और इसे प्रत्यक्ष रूप से जीवन का आधार बनाये। मन के भ्रम तभी दूर होंगे जब वह मन के निकट जायेगा, उसके साथ संवाद करेगा। मन में यदि माया और विकार आधिपत्य जमाये बैठे हैं तो मन को झिंझोड़ने की आवश्यकता होती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी इसमें विशेष सहायक है :

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ॥
जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी॥
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

मनुष्य सारे प्रयास तन के सुख हेतु करता है। वह धन-संपदा और परिवार की भी चिंता उन्हें अपना मान कर करता है। उसका मन इस चिंता में मुग्ध–मूढ़ की तरह सदैव व्यग्र रहता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने उसे अटल सत्य से अवगत कराया है कि जिनकी चिंता में मन व्यथित है उनमें से कुछ भी उसका अपना नहीं है। मनुष्य को सर्वाधिक और सर्वप्रथम चिंता अपने तन की होती है। गुरु साहिब ने कहा है कि वह भी तो उसका अपना नहीं है। समस्या है कि शरीर को मनुष्य मान लिया गया है। गुरबाणी में तन को चोला कहा गया है। चोला मनुष्य नहीं है। मनुष्य तो वह ज्योतिस्वरूप है जिसने यह चोला पहना हुआ है। चोला मैला हो जाने पर वह नया चोला पहन लेगा। चिंता ज्योतिस्वरूप की होनी चाहिये। सुख उस

ज्योतिस्वरूप की चिंता में है।

गुरसिक्ख की मर्यादा है कि वह नितनेम करे। नितनेम की बाणी मन के साथ संवाद है, मन को माया और विकारों की नींद से जगाने का प्रयास है। भक्त कबीर जी ने कहा है कि मनुष्य सदैव अपने मन के साथ जुड़ा रहे और मन को निर्मल कर, उसमें परमात्मा के दर्शन करने का प्रयास करता रहे :

बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥
इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

संसार जादू के तमाशे की तरह है। जो भी चल रहा है और दिखाई दे रहा है वह मिथ्या है, भ्रम है। यहां कोई भी किसी का साथ देने वाला नहीं है। मनुष्य को स्वयं ही अपने कर्मों का फल भोगना है, इसलिये श्रेष्ठ यही है कि वह नित्य अपने मन में जम गई माया और विकारों की मैल को धोने का प्रयास करता रहे, ताकि मन में परमात्मा का स्वरूप प्रकट हो सके, क्योंकि दुखों से उबरने का यही एकमात्र उपाय है। गुरसिक्ख अपने मन के साथ निम्न पांच संवाद नित्यप्रति करे जो श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में अंकित हैं :

१. "ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम॥" —होश में आना है, अवगुण त्यागने हैं, गुण धारण करने हैं।

२. "ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम॥"— दुनियादारी के जंजाल त्याग कर परमात्मा में ध्यान लगाना है।

३. "ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम॥"— भटकन मिट जाये तभी दुख दूर होंगे। परमात्मा के गुणों का गायन करो, यही सच्ची भक्ति और जीवन की सफलता का मार्ग है।

४. "ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम॥"— कुछ भी साथ नहीं आया था, कुछ भी साथ नहीं जाना है, फिर मोह कैसा? जपा हुआ नाम, भक्ति ही सहायक होगी।

५. "ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम॥"— मन को साधने की विधि गुरु से ही प्राप्त होती है। जैसे बिना सीढ़ी के छत पर नहीं चढ़ा जा सकता, इसी प्रकार बिना नाम-स्मरण के परमात्मा को जाना, पहचाना नहीं जा सकता।

गुरसिक्ख उपरोक्त संवाद अपने मन के संग नित्य करे और मन की निर्मलता प्राप्त करे। इसी में सच्चा सुख है और सच्चा आश्रय है। मन का संग ही सत्संग बन जाता है, जब मन में परमात्मा प्रकाशित होने लगता है।

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥

–डॉ. मनजीत कौर*

ईश्वर सर्वव्यापी है। जर्रे-जर्रे में उसकी विद्यमानता है। वह अन्तर्यामी है। उससे कोई पर्दा नहीं है, उससे कुछ भी छिपा नहीं है। इंसानी फितरत है कि इंसान नेक कार्यों को तो जगजाहिर करता है लेकिन पाप-कर्म पर्दे में रहकर करता है। उसे समाज और कानून का तो भय रहता है, मगर ईश्वर का नहीं, जबकि इंसान के प्रत्येक कर्म, विचार तथा संस्कार पर ईश्वर की निगाह रहती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन फरमान है :

घट घट के अंतर की जानत॥
भले बुरे की पीर पछानत॥ (चौपई साहिब)

गुरबाणी आशयानुसार जब तक मनुष्य की करनी और कथनी एक नहीं हो जाती उसके समस्त कर्म व्यर्थ हैं। श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी इस संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करती है :

गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह॥
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह॥
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह॥
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह॥
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५)

श्री गुरु नानक देव जी कलयुगी जीवों की वास्तविक स्थिति का चित्रण करते हुए स्पष्ट करते हैं कि बातें घढ़ने में तो हम बहुत अच्छे हैं, परंतु आचरण में हम सब बहुत बुरे हैं। बाहर से तो हम स्वच्छ एवं श्वेत दिखाई देते हैं परंतु मन से खोटे और काले बने रहते हैं। (यहीं बस नहीं) कोई जीव-स्त्री नकल अथवा बराबरी तो उसकी करती है जो जीव-स्त्री परमात्मा के द्वार पर सेवारत रहती है और अपने प्रभु-पति के साथ आनंदभरपूर जीवन व्यतीत कर रही होती है। (पहले वाली जीव-स्त्री यह नहीं देखती कि) वो जीव-स्त्री समस्त शक्तियों के होते हुए भी विनम्र और बलहीन बनी रहती है अर्थात् किसी भी प्राप्ति का गुमान नहीं करती है। गुरु पातशाह समझाते हैं कि हम सबका जन्म सार्थक हो

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

जाए यदि हम ऐसी जीव-स्त्रियों से मिलें और उनके गुणों को धारण कर लें।

इस संदर्भ में विचार करते हैं तुलम्बा निवासी सज्जन ठग की, जिसने पोशाक तो सज्जन पुरुष वाली धारण की थी और मात्र दिखावे के लिए कर्म भी सज्जन लोगों वाले ही करता था। उसने राहगीरों के लिए एक धर्मशाला बनवा रखी थी, जिसके एक तरफ मंदिर और दूसरी तरफ मस्जिद थी। सुंदर, सफेद चोगा, हाथ में माला और मधुर वचन, लेकिन अंदर से खोट और लालच से भरा हुआ। राहगीरों के खाने में विष मिला कर उन्हें मौत के घाट उतार देता। उनके पास जो कुछ भी होता उसे हड़प लेता। असल में यह थी उसकी दिनचर्या। जब श्री गुरु नानक देव जी भाई मरदाना जी के साथ उसके यहां पहुंचते हैं तो उसकी मंशा को जानते हुए एक सबद उच्चारण करते हैं, जो सज्जन ठग के हृदय को रूपान्तरित कर देता है और वह गुरु जी के चरणों में नत्मस्तक होकर अपने अब तक के किए गुनाहों हेतु क्षमा-याचना करता है और गुरु-कृपा से सचमुच सज्जन पुरुष बन जाता है। इस पावन सबद ने सज्जन ठग को अंदर तक झकझोर दिया :

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु॥
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु॥१॥
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि॥ १॥
रहाउ॥. . .
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि॥
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२९)

भावार्थ : जैसे काँसे की धातु सफेद और चमकीली होती है, परंतु अगर उसे रगड़ा जाए तो वह काली हो जाती है। उसे बेशक सैकड़ों बार धोया जाए तो भी उसकी कालिमा दूर नहीं होती। सज्जन व्यक्ति तो वही होते हैं जो जहाँ भी जाएं वहीं पर सच्चे साथी बनकर साथ निभाएं। ऐसे व्यक्तियों से जहाँ भी लेखा मांगा जाए वे सब कुछ देने हेतु तत्पर रहते हैं। . . . बगुलों के सफेद वस्त्र अर्थात् पंख होते हैं और वे तीर्थों के सरोवरों में निवास भी करते हैं। वे अपनी चोंच में दबोच कर जीवों को खाते रहते हैं, इसलिए ऐसे सफेदपोश बगुला-भक्तों को सज्जन तो नहीं माना जा सकता। कहने से तात्पर्य, बाहरी सुंदरता अथवा भव्यता आंतरिक कुरूपता अथवा खोखलेपन को नहीं ढक सकती।

यह तो स्पष्ट है कि परम पिता परमेश्वर

बाहरी किसी आडम्बर से प्रसन्न नहीं होता। इस संदर्भ में भक्त शेख फरीद जी की बाणी प्रश्नोत्तर के माध्यम से बड़ा सुंदर संदेश देती है, जिसमें एक जीव-स्त्री के मनोभाव को दरसाया गया है, जो कि अपने प्रियतम को वश में करना चाहती है। उस जिज्ञासु जीव-स्त्री के प्रश्न को उठा कर अगले श्लोक में उसका स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण उत्तर दिया गया है। जिज्ञासु-स्त्री का प्रश्न है— हे बहन! वह कौन-सा 'अक्षर' है, वह कौन-सा 'गुण' है, वह कौन-सा 'शिरोमणि मंत्र' है और वह कौन-सा 'वेश' है, जिसे मैं धारण करूँ और मेरा प्रियतम प्रभु-पति मेरे वश में आ जाए?

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु॥

कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

साधक को प्रभु-प्राप्ति हेतु जो गुण हृदय में धारण करने चाहिए, उसका जवाब जीव-स्त्री के माध्यम से भक्त शेख फरीद जी अगले श्लोक में देकर समूची मानव जाति का मार्गदर्शन करते हैं कि हे बहन! प्रियतम प्रभु को रिझाने अथवा पाने हेतु 'झुकना' 'अक्षर' है, 'सहन करना' 'गुण' है और 'मीठा बोलना' 'शिरोमणि मंत्र' है। यदि ये 'तीन वेश' हृदय में धारण कर ले तो तेरा प्रियतम प्रभु-पति तेरे वश में आ जाएगा :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु॥

ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८४)

वस्तुत: जब तक मनसा-वाचा-कर्मणा अर्थात् मन-वचन-कर्म से एकरूपता नहीं आ जाती तब तक हम ईश्वरीय कृपा के पात्र नहीं बन सकते। 'आसा की वार' पावन बाणी में श्री गुरु नानक देव जी का इस संदर्भ में बड़ा सुंदर पैगाम है :

सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु॥

ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु॥

फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत॥

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥...

सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७०)

इस पावन शबद में गुरु पातशाह ने सेमल के वृक्ष का उदाहरण देकर यही समझाया है कि असल में जो दिखाई दे रहा है वो नहीं है और जो दिखाई नहीं दे रहा, वो है। यह दुविधा वाली स्थिति है। गुरु जी का फरमान है कि सेमल का

वृक्ष तीर की तरह सीधा, लंबा और विशाल है, लेकिन इस वृक्ष के पास आने वाले प्राणी निराश और हताश होकर जाते हैं। इस लंबे-ऊँचे फलदार विशाल वृक्ष के फल फीके (स्वाद रहित), फूल रूईदार होते हैं और इसके पत्ते भी किसी काम नहीं आते।

समस्त नैतिक गुणों का सार है— मीठा बोलना और हृदय से विनम्रता का धारक बनना अर्थात् मन-वचन-कर्म से इन गुणों को धारण करना। मनुष्य यह सब अपने स्वार्थ के लिए करता है। दूसरे की भलाई और सम्मान हेतु कोई विनम्र नहीं होता। अगर तराजू पर रखकर भी तौला जाए अर्थात् गंभीरता से परख की जाए तो विनम्र रहने वाला मनुष्य ही (गुणों में) वजनदार नज़र आता है। अपराधी व्यक्ति तो दुगना झुकता है, जैसे हिरन का शिकार करने वाला शिकारी मृग पर निशाना साधते हुए झुक जाता है। देखने वाले को प्रतीत होता है कि वह अष्टांग प्रणाम कर रहा है, लेकिन उसका मंतव्य तो जीव की हत्या करना होता है। गुरु जी समझाते हैं कि ऐसे शीश झुकाने का क्या लाभ अगर हृदय छल-कपट से भरा हो? कहने से भाव, ईश्वर हमारे अन्त:करण की भावना को पहले परखता है और बाहरी क्रिया-कलापों को बाद में, इसलिए अंतर्मन की शुद्धता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

वास्तव में बिना शुद्ध आचरण के बाहरी क्रिया-कलाप पानी को बिलोने सदृश्य हैं। जैसे दही को मथने पर मक्खन निकलता है, लेकिन इसके विपरीत अगर कोई पानी को बिलोता रहे, उसमें से मक्खन नहीं निकल सकता। धर्म के बाहरी चिन्ह धारण करने मात्र से कोई धर्मी नहीं हो सकता, जब तक उन प्रतीक-चिन्हों के अनुसार व्यावहारिक जीवन नहीं बनाया जाता। इस संदर्भ में तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने भी बहुत सुंदर दृष्टांत देकर समझाया है :

भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि॥
वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५८८)*

अर्थात् पाखण्डी व्यक्ति की तृष्णा की आग नहीं बुझती, क्योंकि वह सदैव चिन्तित रहता है। बाहरी वेश से शरीर को कष्ट देने से मन नहीं सधता और प्रभु प्राप्त नहीं होता, क्योंकि साँप की बाँबी को पीटने या मारने से साँप नहीं मरता। ऐसे काम तो गुरु विहीन लोग ही किया करते हैं।

गुरु जी यही दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं कि ईश्वर-नाम के बिना मुक्ति नहीं होती और व्यक्ति

(बाहरी, व्यर्थ के) कर्मों का अहंकार करता हुआ ही मर-खप जाता है।

गुरमति विचारधारा में सैकड़ों उदाहरण इस प्रकार के प्रस्तुत किए गए हैं। बाणी और बाणा, कर्म और धर्म, करनी और कथनी में एकरूपता के बिना मानव जीवन सार्थक नहीं हो सकता। श्री गुरु नानक देव जी ने कर्मकाण्डों की तुलना बंजर भूमि में सिंचाई करने के समान की है, जहाँ मेहनत-मशक्कत करने के बाद भी फसल पैदा नहीं होती। कच्ची दीवार पर चूने का पलास्तर उसे कोई मजबूती नहीं दे सकता :

काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥
काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११७१)

गुरु पंचम पातशाह ने सुखमनी साहिब में करनी और कथनी की समानता पर बल देते हुए मानव-मन को झकझोरा है :

करतूति पसू की मानस जाति ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २६७)

गुरबाणी पढ़ने-सुनने के बावजूद भी हम दिन-रात पाखण्डों में संलिप्त हैं। बाहरी वेश हमारा धार्मिक है, लेकिन हमारे अन्तर्मन में विकारों की मैल भरी पड़ी है। हम चाहे कितना भी छिपाएं लेकिन असली तथ्य को छिपा नहीं सकते। बाहर से बेशक हम ज्ञान, ध्यान और स्नान का दिखावा करते हैं, लेकिन मन में लोभ आदि अंगड़ाइयां ले रहे हैं। हमने तन पर तो राख लगा रखी है, जबकि हृदय में तृष्णा की अग्नि जल रही है। गले में पत्थर बांध कर भला हम समुद्र से कैसे पार हो सकते हैं!

जब तक इंसान की कथनी व करनी एक समान नहीं हो जाती, विचारों तथा व्यवहार में से ईश्वरीय गुणों का प्रकटीकरण नहीं होता, तब तक हम छल-कपट से भरे रहते हैं। संसार रूपी भवसागर से पार उतरना है, जन्म-मरण से रहित होना है, तो मन-वचन-कर्म से निर्मल गुणों को धारण करना होगा।

भगउतु या भगौती या भगउती से अभिप्राय

*–डॉ. इंदरजीत सिंह गोगोआणी**

तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं॥

भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९३)

पंच खालसा दीवान भसौड़ की तरफ से भगौती/भगउती शब्द के प्रति गलत प्रचार करने के कारण कुछ सिक्ख संगत के मन में भ्रम पैदा होना स्वाभाविक है। इसी कारण कुछ गुमराह लोगों द्वारा *"प्रिथम भगौती सिमरि कै"*— पंथक अरदास की पहली पउड़ी (पद) में से 'भगौती' के सही अर्थों का रूप बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है।

यदि हम सबसे पहले 'सम अर्थ कोश' से अर्थ पढ़ें तो वाहिगुरु शब्द के १७० समअर्थी शब्दों में जहाँ— ੴ, अकाल, साँई, खुदा, गोपाल, जगजीवन, जगन्नाथ, नारायण, निरंकार, पारब्रह्म, बीठल, रमईआ, मउला, मधसूदन आदि नाम हैं, वहाँ भगउत, भगउती, भगवत, भागउती आदि शब्द भी परमात्मा के लिए हैं। इसी तरह भाई कान्ह सिंह नाभा ने 'महान कोश' में भगउती के छ: अर्थ किये हैं, जैसे— १. भगवत- करतार का उपासक, २. भगवत की, ३. भगवती, ४. खड्ग, श्री साहिब, तलवार, ५. महाकाल (अर्थात् परमात्मा) ६. एक छंद।

'श्री गुरु ग्रंथ कोश' (कृत ज्ञानी हज़ारा सिंघ) में 'भगउती' के तीन अर्थ हैं— १. भगउती (संस्कृत भगवती) पूजनीय, आदरणीय, भगवान, २. एक पंथ का नाम है वैष्णव, जो भगवत परायण हो, ३. (संस्कृत भकतरी) उपासना या भक्ति करने वाला। इसी तरह (संस्कृत भगवत=ईश्वर) भगवंत, परमात्मा।

'गुरमति मारतंड' भाग द्वितीय में और विस्तार दिया गया है— "गुरबाणी में और सिक्ख धर्म से सम्बन्धित ग्रंथों में भगउती शब्द— करतार (प्रभु) का भक्त, भगवत की, भगवती, श्री साहिब (खड्ग), संहारकर्ता, महाकाल प्रसंग के अनुसार अर्थ रखता है।" इससे आगे भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'प्रिथम भगौती सिमरि कै' से सम्बन्धित विवरण दिया है कि इस जगह 'भगौती' शब्द का अर्थ 'पारब्रह्म' है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'महला ३' और 'महला

**प्रिंसिपल, खालसा कॉलेज सीनियर सेकंडरी स्कूल, श्री अमृतसर साहिब। फोन : ९८१५९-८५५५९*

५' शीर्षकाधीन 'भगउती' शब्द प्रभु-उपासक के अर्थों में भी है और एक बार भगवान के भावार्थ में भी है। पहली पंक्तियों में अर्थ भक्ति करने वाला (भगउती) से है :

—सो भगउती जो भगवंतै जाणै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८८)

—अंतरि कपटु भगउती कहाए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८८)

—ऐसा भगउती उतमु होइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८८)

—भगउती भगवंत भगति का रंगु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २७४)

—नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २७४)

—तिसु भगउती की मति ऊतम होवै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २७४)

—कोई कहतउ अनंनि भगउती॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९१२)

इसी प्रकार अगली पंक्ति में 'भगउती' के अर्थ 'भगवान' हैं :

इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ॥
भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३४८)

यहाँ पर प्रो. साहिब सिंघ ने 'भगउती मुद्रा' के अर्थ 'विष्णु-भक्ति के चिह्न' किये हैं और भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'गुरमति मारतंड' में 'भगवान की मुद्रा' किये हैं, जबकि भावार्थ भगवान से सम्बंधित ही है।

हम जो रोज़ाना की पंथक मर्यादा के अनुसार अरदास करते हैं उसकी पहली पउड़ी यहाँ से आरंभ होती है— *"ੴ वाहिगुरू जी की फतह॥ श्री भगौती जी सहाइ॥ वार श्री भगौती जी की पातशाही १०॥ प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ॥ . . . तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ॥ सब थाईं होइ सहाइ॥"*

यह उपरोक्त पउड़ी श्री दसम ग्रंथ साहिब के पन्ना ११९ पर सुस्थित है। यहाँ पर भी 'भगौती' का अर्थ मूल पाठ के फुट नोट में 'महाकाल' लिखा है। इस पावन ग्रंथ में 'भगउती' का मंगलाचरण अनेक बार आया है। उदाहरणस्वरूप :

—ੴ सतिगुर प्रसादि॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ *(पन्ना १२७)*

—अथ परसराम अवतार कथनं॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ *(पन्ना १६९)*

—स्री भगउती जी सहाइ॥
अथ ब्रहम अवतार कथनं॥ *(पन्ना १७२)*

—स्री भगउती जी सहाइ॥
अथ गउर बधह कथनं॥ *(पन्ना १७५)*

—स्री भगउती जी सहाइ॥ चौपई॥

(पन्ना १७९, १८१, १८२)

—अथ मनु राजा अवतार कथनं॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ *(पन्ना १८४)*

—अथ सूरज अवतार कथनं॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ (पन्ना १८५)
—अथ चंद अवतार कथनं॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ (पन्ना १८७)
—अथ स्री शसत्र नाम माला पुराण लिखअते॥
स्री भगउती जी सहाइ॥ पातिशाही १०॥
(पन्ना ७१७)

इस प्रकार यहाँ 'भगउती' से अभिप्राय 'परमात्मा या महाकाल' है। वैसे भी किसी शब्द के अर्थ प्रकरण के अनुसार समझाए जाते हैं, जैसे 'लई भगउती दुरगशाह'। यहाँ 'भगउती' के अर्थ 'कृपाण' या 'श्री साहिब' हैं। भाई गुरदास जी ने भी २५वीं वार में कृपाण के लिए 'भगउती' शब्द इस्तेमाल किया है :

. . . नाउ भगउती लोहु घड़ाइआ। . . . ६॥

उदाहरणतया कोश में 'हरि' शब्द के ४४ अर्थ हैं। 'हरि' का अर्थ 'हरी' या 'परमात्मा' भी है, परन्तु 'हरि' का अर्थ मेंढक, पानी, पहाड़, साँप आदि भी है। इसी प्रकार 'भगउती' 'शब्द को समझने की ज़रूरत है। गुरबाणी की दृष्टि से विचार करें तो भक्त रविदास जी का जो शब्द इस लेख के आरंभ में दर्ज है— "तर तारि अपवित्र . . . " का भावार्थ है :—

हे भाई! तर तारि (ताड़ी का वृक्ष) अपवित्र माना जाता है, उसी तरह उस वृक्ष से बने कागज़ (कागरा) के बारे में लोग विचार करते हैं, परन्तु जब भगवान की स्तुति (भगति भगउतु) उस पर अर्थात् ताड़ के वृक्ष से बने कागज पर लिखी जाती है तो उसकी पूजा की जाती है। यहाँ 'भगउतु' से अभिप्राय 'परमात्मा' से है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भक्त रविदास जी का जीवन-काल १४वीं सदी के ८वें दशक से १५वीं सदी के ९वें दशक तक माना गया है। स्पष्ट है कि उस समय 'भगउती' का अर्थ 'परमात्मा' लिया गया हो। इधर दसम पातशाह जी का जीवन-काल १७वीं सदी के ७वें दशक से १८वीं सदी के प्रथम दशक तक है। क्या इस समय 'भगउती' का अर्थ 'परमात्मा' बदल गया?

तत्वसार के रूप में जब गुरु-पंथ के सम्मानित विद्वानों और धार्मिक शख़्सियतों ने 'सिक्ख रहित मर्यादा' तैयार की तो 'भगउती' शब्द पर कोई एतराज नहीं था, क्योंकि इसके अन्य अर्थों के अलावा एक अर्थ 'परमात्मा' भी है, इसलिए दसम पातशाह जी द्वारा रचित यह पउड़ी श्रद्धा, भावना और भरोसे के साथ पढ़ी जाये। इसे बदलने वालों को पंथ ने नकार दिया है। 'भगउती' शब्द के सही भावार्थ को विवेक बुद्धि के साथ समझने, समझाने और प्रचार करने की ज़रूरत है, ताकि भविष्य में "प्रिथम भगौती सिमरि कै" वाली अरदास की पउड़ी को बदलने या बिगाड़ने की कोई गलती न करे।

बिना शसत्र केस नरं भेड जानो।

*– स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

गुरबाणी, गुरमति सिद्धांत और संपन्न सिक्ख परंपराएं सदा उन्नत रही हैं। ये रहती दुनिया तक मानवता के व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी हैं। हमारे बुज़ुर्गों द्वारा गुरमति आशयानुसार रचित 'रहितनामे' आदर्श जीवन-शैली के बड़े अहम स्रोत हैं। भाई सुक्खा सिंघ 'गुरबिलास पातशाही १०वीं' में बहुत ख़ूबसूरत लिखते हैं कि "बिना शसत्र केस नरं भेड जानों। गहे कान तां को कितै लै सिधानो।" अर्थात् केश और शस्त्रों के बिना मानव केवल एक भेड़ के समान है। उसे कान से पकड़ कर जहाँ मर्ज़ी घसीट कर ले जाओ। 'रहितनामे' के इस शाब्दिक भाव के अतिरिक्त इतिहास ने बहुधा इसकी व्यावहारिक व्याख्या भी की है। गुरमति सिद्धांतों तथा समृद्ध गुरमति परंपराओं की व्याख्या इतिहास समय-समय पर स्वयं ही करता आया है और यह रहती दुनिया तक होती रहेगी।

भारतीय इतिहास के संदर्भ में भेड़ के समान जीवन जी रही शस्त्रहीन कौमों के स्त्री-पुरुषों की काबुल की मंडियों में होती नीलामी 'बिना शसत्र केस नरं भेड जानो' की व्याख्या ही था। इसके विपरीत शस्त्रधारी खालसा पंथ भारत की बहू-बेटियों को अत्याचारियों से छुड़वा कर उनके घर तक पहुंचाता रहा है।

आज भी देश की सरहदों पर जब खतरे के बादल मंडराने लगते हैं तो सिक्ख रेजिमेंट को ही सामने किया जाता है। इस रेजिमेंट ने १५ जून, २०२० ई. को शस्त्रधारी खालसा-पंथ की विलक्षणता को इतिहास में एक बार फिर से दोहराया है, जिससे दुनिया भर में सिक्खी का कद ऊंचा हुआ है। भारत-चीन सरहद पर लद्दाख़ की गलवान घाटी में पहले निहत्थे ग़ैर-सिक्ख भारतीय जवानों का चीनी फौजियों ने भारी नुकसान किया, फिर सिक्ख रेजिमेंट (IIIrd Punjab) के जवान चीनी फौजियों पर प्रभावशाली रहे। कलगीधर पातशाह द्वारा बख्शिश खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त, शस्त्रधारी भारतीय फ़ौज के २३ वर्षीय सिक्ख सिपाही सरदार गुरतेज सिंघ ने खालसाई जयकारा 'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' बुला कर चीनी फौजियों का आधा हौसला तो जयकारे द्वारा ही तोड़ दिया। चार चीनियों को पहाड़ी से नीचे फेंक कर मार डाला और फिर अपनी सिरी साहिब (कृपाण) द्वारा एक चीनी फ़ौजी का गला काट कर उसी के हथियार से सात अन्य चीनी सिपाहियों को मार दिया। इसके साथ तीन अन्य सिक्ख फ़ौजी— नायब सूबेदार सरदार सतनाम सिंघ, सरदार मनदीप सिंघ और सिपाही सरदार गुरविंदर सिंघ ने २० भारतीय फौजियों सहित चीनी फौजियों के साथ टक्कर लेते हुए देश-कौम के लिए शहादत दी।

**संपादक, गुरमति प्रकाश एवं गुरमत ज्ञान। फोन : ९९१४४-१९४८४*

सरदार गुरतेज सिंघ ने खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति से कलगीधर पिता के आदर्श— "सवा लाख से एक लड़ाऊं। तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊँ।" को साकार कर दिखाया। अमृत की शक्ति, सिक्खी जज़्बा और फ़ौज का आधुनिक प्रशिक्षण इकट्ठे हो जाएँ तो जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा) पाकिस्तानी फ़ौज को घुटनों के बल ला सकता है, जनरल हरबखश सिंघ हुकूमत के अमृतसर को छोड़ कर पीछे हटने वाले आदेश रूपी भद्दे मंसूबे को असफल कर बार्डर पर ही पाकिस्तानी फ़ौज को रोक सकता है, सरदार गुरतेज सिंघ १२ चीनी फौजियों का अकेले मुकाबला कर सकता है।

सरदार गुरतेज सिंघ की शौर्य-गाथा ने उन अल्प बुद्धि वाले लोगों को भी करारा जवाब दिया है जो कहा करते हैं कि आधुनिक जानलेवा हथियारों के युग में कृपाण की आवश्यकता नहीं है। ख़ालसा की कृपाण ने पहले मुगलों और फिर अंग्रेज़ों से मुल्क को आज़ाद करवाया, वर्तमान में एक बार फिर देश की सरहद पर देश की मान-मर्यादा को बचाने के लिए ख़ालसा की कृपाण ही काम आई है।

ख़ालसा की कृपाण की इस वीर-गाथा ने उन पंथ-विरोधी ताकतों को भी चुन्नौती दी है जो आए दिन सिक्खों को कृपाण पहन कर कभी संसद, कभी अदालतों में जाने से रोकते हैं, कभी कृपाण पहन कर जहाज़ में चढ़ने से रोकते हैं और कभी सिक्ख बच्चों को कड़ा व कृपाण पहन कर इम्तिहान में बैठने से रोकते हैं।

भारत सरकार को चाहिए कि समूचे भारत में स्कूली बच्चों के इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में सरदार गुरतेज सिंघ की इस वीर-गाथा को शामिल किया जाये, ताकि सबको पता चल सके कि इस देश के लिए सिक्खों और सिक्खों की कृपाण की क्या महत्ता है। यदि देश की आज़ादी की ख़ातिर गौण भूमिका निभाने वालों के जीवन-वृत्तांत स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम (सिलेबस) में पढ़ाए जा सकते हैं, उन पर फ़िल्में बन सकती हैं, तो देश को पहले मुगलों और फिर अंग्रेज़ों से आज़ाद करवाने वाले असली नायकों— नवाब कपूर सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार बघेल सिंघ, अकाली फूला सिंघ, सरदार शाम सिंघ अटारीवाला, गदरी बाबा तथा आज़ादी के बाद देश की रक्षा करने वाले जनरल जगजीत सिंघ (अरोड़ा), जनरल हरबखश सिंघ, सरदार गुरतेज सिंघ आदि के जीवन से सम्बंधित क्यों नहीं पढ़ाया जा सकता?

सिक्ख बच्चों को तो सरदार गुरतेज सिंघ पर अवश्य फख्र करना चाहिए। सिक्ख बच्चों को फ़िल्मी कलाकारों और असभ्य गायकों को अपना आदर्श न मान कर साहिबज़ादों, सिक्ख शूरवीरों तथा सरदार गुरतेज सिंघ जैसे सिक्ख नायकों को अपना जीवन-आदर्श बनाना चाहिए। पतितपन का त्याग कर, खंडे-बाटे की पाहुल छक कर शस्त्रधारी खालसा सजना चाहिए। अपने नाम के साथ 'सिंघ' व 'कौर' शब्द अवश्य लगाना चाहिए, तभी हम सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की खुशियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

कालापानी की सेलुलर जेल में वतन की खातिर मर-मिटने वाले स्वतंत्रता सेनानी

–प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर*

अंडमान-निकोबार भारत के दो टापू हैं, जहाँ जाने के लिए समुद्र में से भूत काल में समुद्री जहाज़ द्वारा जाया जाता था और वर्तमान काल में हवाई जहाज़ द्वारा भी जाया जा सकता है। इन टापुओं के राजनैतिक-प्रशासनिक ढांचे को चलाने, वहाँ के निवासियों, ख़ास कर अति कठोर से कठोर जेल सज़ा काटने के लिए या ज़रूरत के अनुसार सेलुलर जेल में अन्य बंदी कैदियों के प्रबंध का कार्य एक उप-राज्यपाल करता है, जो अपरोक्ष रूप से भारत के गृहमंत्री तथा गृह सचिव के अंतर्गत कार्यशील रहता है। सेलुलर जेल, बर्मा की मांडले जेल के बाद दुनिया की सबसे अधिक ज़ुल्मी और बदनाम जेल है। इसके बाद ज़िला पटियाला के शहर नाभा की उच्च सुरक्षा वाली जेल है। इन जेलों में समय की सरकारों द्वारा अति खूँखार और ख़तरनाक समझे जाते कैदियों को रखा जाता है, जहाँ उनके साथ केवल अमानवीय व्यवहार ही नहीं, बल्कि उन्हें अमानवीय यातनाएँ भी दी जाती हैं। वहाँ पर मानवाधिकारों की कोई बात नहीं होती। नाभा की जेल के अंदरूनी हालात के बारे में एक ही बात द्वारा पाठकों को समझ आ जायेगी कि अपने धार्मिक और राजसी अधिकारों की रक्षा के लिए खालसा पंथ द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में पूर्णतया शांतमयी गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो का मोर्चा १९२३-१९२५ ई. में लगाया था। जत्थों में श्री अकाल तख़्त साहिब श्री अमृतसर साहिब से गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो (जिला फरीदकोट) में अंग्रेज़ों द्वारा खंडित श्री अखंड पाठ साहिब को पूर्ण गुरु-मर्यादा सहित करने और नाभा नरेश की सत्ता-बहाली की माँग को लेकर 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप करते हुए पैदल लंबा सफ़र तय किया जाता था। बिलकुल निहत्थे (केवल गातरे वाली छोटी कृपाण को छोड़ कर) जत्थों पर बड़ी बेदर्दी और निर्दयता के साथ अंग्रेज़ पुलिस द्वारा लाठीचार्ज, गोलियों की बौछाड़ कर तथा घोड़ों के पैरों तले रौंदकर सिंघों को शहीद किया जाता था। उस समय स्थिति का जायज़ा लेने और हकीकत से अवगत होने के लिए तथाकथित राष्ट्रीय कांग्रेसी नेता पंडित जवाहर

* *पूर्वाध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१, फोन : ९९१५८-०५१००*

लाल नेहरू एवं मदन मोहन मालवीय आए। सरकार ने नेहरू को गिरफ्तार कर नाभा जेल में बंद कर दिया। मख़मली गद्दों पर सोने वाले, शानदार कारों व जहाज में सफ़र करने वाले, अंग्रेज़ी स्कूल-कॉलेज में पढ़े, अंग्रेज़ी संस्कृति में बड़े हुए अमीरज़ादे नेहरू उस जेल में एक ही रात में तड़प उठे थे। तारें खड़क गईं क्योंकि उनके पिता मोती लाल नेहरू की सरकारे-दरबारे पूरी चलती थी। उसने सरकार के आगे फरियाद कर अगले ही दिन नेहरू को जेल से रिहा करवा लिया था। नेहरू परिवार की अंग्रेज़ सरकार के साथ अंदर खाते मिलीभुगत थी। यह घटना सच्चे देश-भक्त शहीदों का अपमान ही थी। ऐसी भयावह है नाभा जेल!

कालापानी की जेल तो नाभा वाली जेल से एक हज़ार गुना अधिक कठोर व सख्त जेल है, जहाँ कैदियों को मनुष्य तो क्या, पशुओं से भी बदतर समझा जाता है। यह कालापानी की वह जेल है, जिसमें आज़ादी के संग्राम में कार्यशील योद्धाओं को तत्कालीन अग्रेज़ साम्राज्य अदालतें 'कालापानी की सज़ा' सुना कर भेज दिया करती थीं। मौजूद रिकार्ड से स्पष्ट है कि उन कैदियों में बाबा महाराज सिंघ डॉ. दीवान सिंघ कालापानी सहित नब्बे प्रतिशत तक सिक्ख संघर्षी योद्धा थे, जिनकी यादों और निशानियों को इतिहास को समय की केंद्रीय सरकारों द्वारा बड़ी बेशर्मी और ढीठताई के साथ समूल रूप से मिटा दिया गया और जो लोग लिखित क्षमा-याचना कर बाहर आ गए या फिर वे लोग, जिन्होंने जापानियों के (१९४२-४५ ई.) टापू पर कब्ज़ा कर जापानी फ़ौज के साथ मिल कर भारतीयों ख़ास कर सिक्खों पर अनगिनत अमानवीय अत्याचार करवा कर, उन्हें शहीद करवा दिया था, उनकी तसवीरों और मूर्तियों को लगाया गया है, उनकी यादगारें बनाई गई हैं। जो 'रौशनी और आवाज़' (Light and Sound) वाला शो दिखाया जाता है, उसमें से सिक्ख संग्रामी योद्धाओं को मूलत: आलोप कर दिया गया है। इससे बड़ी बेइन्साफ़ी और बेईमानी और क्या हो सकती है?

सेलुलर जेल में हमेशा ही घना अंधेरा रहता है। जिस काल कोठरी (Cell) में जंग-ए-आज़ादी के प्रथम संग्रामी योद्धा शहीद बाबा महाराज सिंघ को रखा गया, उस कोठरी में रौशनी की एक किरण भी नहीं आती थी। जिस कोठरी में डॉ. दीवान सिंघ कालापानी को रखा गया था और उन पर लगातार ८७ दिन भारी अत्याचार किया गया, उन्हें अमानवीय कष्ट दिए जाते रहे, वहां पर भी रौशनी का नामोनिशान नहीं था। दूसरी ओर अंग्रेज सरकार, जो अपने आप को दुनिया की सबसे

अधिक सभ्यक कहलवाती है, उनके राज-प्रबंध में न कोई कानून, न कोई दलील, न कोई अपील थी। उनके कोश (Dictionary) में इंसानियत, इन्साफ, मानवाधिकार और मानव-समानता का अक्षर-मात्र नहीं था, पूर्णत: अंधेरगर्दी थी। मैंने इस आलेख की लंबाई की सीमा को सीमित रखते हुए केवल दो महान शख़्सियतों का ही वर्णन किया है, जबकि वहां तो सभी सिक्ख कैदियों के साथ यही कुछ घटित होता था।

यह भी ऐतिहासिक सच्चाई है कि जब १९४२-१९४५ ई. के दौरान इन टापुओं पर अंग्रेज़ों की जगह जापानियों का कब्ज़ा हो गया, जिसे इतिहास में अंग्रेज़ी भाषा में (Japanesee Occupation) कहा गया। वहाँ पर सुभाष चंद्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी (INA) और जापानी फ़ौज का कब्ज़ा था। उन दिनों बेशर्मी के साथ किया जा रहा जब्र, ज़ुल्म, अत्याचार सारी हदें पार कर चुका था। उस समय की अंधेरगर्दी ने तो इतिहास को भी शर्मसार कर दिया था। इन सत्यापित तथ्यों और हकीकत से पर्दा मुकम्मल रूप से डॉ. दीवान सिंघ कालापानी के पुत्र डॉ. महिंदर सिंघ (ढिल्लों) ने अपनी शाहकार पुस्तक 'A Titan in the Andaman' अर्थात् 'अंडमान में एक बब्बर शेर' में पूरी तरह से उठा दिया है। डॉ. महिंदर सिंघ (ढिल्लों) ने सारी हकीकत से अवगत होने और टापू के हालात जानने के लिए वहाँ पर आज़ादी के बाद स्थापित किए गए पूर्णत: असत्य पर आधारित, कल्पित कहानियों के इतिहास को जानने के लिए टापू के कई दौरे किये। इसके पश्चात् उन्होंने यह पुस्तक तैयार कर ख़ालसा पंथ, सिक्ख कौम तथा समूह स्वतंत्रता संग्रामियों, भारत के असली सपूतों की दास्तान संसार के सामने लिखित रूप में प्रकट कर उत्तम और सराहनीय कार्य किया है तथा वास्तविकता से पर्दा उठा दिया है। यहाँ यह बात सबको समझने की ज़रूरत है कि जैसे कहा जाता है कि इतिहास समय की सरकारों की ही दासी-वेश्या होता है (History is a Proticchute; it is re-written)। सरकारें अपनी राजसी ताकत का नाजायज फायदा उठा कर सही और सच्चे इतिहास को मिटा कर उसकी जगह नकली, झूठा और मनघड़त इतिहास सृजित कर दिया करती हैं। यहाँ भी यही कुछ हुआ या यह कह लो कि भारत की ज़ंग-ए-आज़ादी के मुकम्मल इतिहास को भी पलीद कर दिया गया है। सच्चाई को मिटाया गया है या उसके बारे में आशंका, भ्रम पैदा कर उसे मैला कर दिया गया है। मनघड़त कहानियाँ बना कर झूठ पर

आधारित कुछ निखट्टू लोगों को इतिहास में हीरो बना कर पेश किया गया। आए दिन सरकारी मीडिया द्वारा उनकी सराहना की जा रही है। अब इन्टरनेट का युग है। बुद्धिमान और सचेत लोग तुरंत असलियत पता कर लेते हैं। इसीलिए आज सख़्त ज़रूरत है कि सभी पुराने और सही ऐतिहासिक तथ्यों की गहरी खोज करवा कर सही इतिहास सृजित किया जाये। आज के युग में यही बड़ी कौमी सेवा होगी। खालसा पंथ की समूह संस्थाओं, बुद्धिजीवियों, इतिहासकारों को इस तरफ़ सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

यहाँ यह लिखना भी उपयोगी होगा कि लेखक ने अपने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्षता कार्य-काल के दौरान कालापानी की वास्तविकता जानने के लिए एक सात-सदस्यीय समिति गठित की थी, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्कालीन महासचिव, अपर सचिव, पत्रकार, कॉलेज प्रिंसिपल आदि प्रसिद्ध बुद्धिजीवी शामिल थे। उस समिति ने मौके पर पहुँच कर कई दिन तक टापू का दौरा किया। टापुओं के गेट और गेट के अंदर स्थापित की गई मूर्तियों तथा अन्य निशानियों का भी जायज़ा लिया और स्थानीय लोगों से भी वास्तविक तथ्य जानने की कोशिश की। वहाँ पर तैनात उपराज्यपाल श्री जगदीश मुखी के साथ भी बातचीत की। पाठकों की जानकारी के लिए समिति की रिपोर्ट निम्नानुसार है :—

सेलुलर जेल के पंजाबी/ सिक्ख स्वतंत्रता सेनानियों से सबन्धित रिपोर्ट

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की राजधानी पोर्टलेयर में मौजूद सेलुलर जेल भारत के स्वतंत्रता सेनानियों पर हुए अमानवीय अत्याचार की याद दिलाती है। इस जेल को भारत की राष्ट्रीय यादगार के रूप में स्थापित और विकसित किया गया है। स्वतंत्रता आंदोलन की याद दिलाती गैलरियाँ और म्यूज़ियम इसमें स्थापित किये गए हैं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पंजाबियों और विशेषतया सिक्खों का सर्वाधिक योगदान रहा है, परन्तु इन गैलरियों में उनके योगदान को तुलनात्मिक आधार पर बहुत कम पेश किया गया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने इसका गंभीर नोटिस लेते हुए २२ अप्रैल, २०१७ ई. को चंडीगढ़ में एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया था, जिसमें फ़ैसला लेते हुए एक समिति का गठन किया गया। समिति को पोर्टब्लेयर जेल का दौरा कर तथ्यों की पड़ताल करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के

महासचिव स. अमरजीत सिंघ (चावला) के नेतृत्व में एक सात-सदस्यीय शिष्टमंडल २९-०४-२०१७ से ०३-०५-२०१७ तक पोर्टब्लेयर गया, जिसमें निम्नलिखित सदस्य शामिल थे :—

१. स. अमरजीत सिंघ (चावला), महासचिव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, शिष्टमंडल प्रमुख और साथ में छ: सदस्य

२. स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड, कार्यकारी समिति सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

३. डॉ. धरमिंदर सिंघ (उब्भा), डायरेक्टर एजूकेशन विभाग, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

४. डॉ. परमवीर सिंघ, सदस्य, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड

५. स. हरभजन सिंघ मनावां, अपर सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

६. स. जगतार सिंघ, वरिष्ठ पत्रकार

७. स. गुरदरशन सिंघ बाहिया

समिति ने अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में राष्ट्रीय यादगार के तौर पर विकसित की गई सेलुलर जेल का सर्वे कर निम्नलिखित तथ्यों से सबन्धित जानकारी प्राप्त की :—

१. सेलुलर जेल के बाहर इन सात स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं —विनायक दामोदर सावरकर (महाराष्ट्र), बाबा भान सिंघ (पंजाब), पंडित राम रक्खा (पंजाब), महावीर सिंह (उत्तर प्रदेश), इन्दू भूषण राय (बंगाल), मोहन किशोर नामदास (बंगाल), मोहित मोइत्रा (बंगाल)।

२. जेल के गेट के अंदर दाख़िल होते ही एक म्यूज़ियम और नेता जी सुभाष चंद्र बोस की याद में एक आर्ट गैलरी बनी हुई है। म्यूज़ियम में सेलुलर जेल का इतिहास, सिक्के, कैदियों को दी गई यातनाओं की दास्तान, कैदियों के गले में डाले जाने वाले लोहे के रिंग, वर्दियाँ आदि का प्रदर्शन किया गया है। इसके साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों द्वारा इस टापू पर कब्ज़ा करने का वर्णन भी मिलता है। नेता जी की याद में बनी हुई आर्ट गैलरी में उनके जीवन-संघर्ष को दर्शाते चित्रों और घटनाओं की प्रदर्शनी लगाई गई है।

३. जेल के अंदर पाँच गैलरियाँ स्थापित हैं, जिनमें कैदियों को यातनाएं देने से संबन्धित प्रतिमायों और चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई है। जो चित्र प्रदर्शित किये गए हैं उनमें पंजाबियों का बहुत कम वर्णन मिलता है। इस जेल में स. भान सिंघ, स. नंद सिंघ, स. रोडा सिंघ आदि स्वतंत्रता सेनानियों ने अमानवीय प्रताड़ना सहन करते हुए शहादत प्राप्त की थी। प्रताड़ना सहन करने वालों में स. चतर सिंघ का नाम

प्रमुख तौर पर लिया जा सकता है, जिन्हें लगभग तीन वर्ष तक साढ़े तीन फुट आकार के पिंजरे में कैद कर रखा गया था। इनके जेल-साथियों (विशेष तौर पर स. सोहन सिंघ भकना) ने लंबी भूख हड़ताल कर इन्हें पिंजरे से मुक्ति दिलाई थी। इसके साथ ही बहुत-से प्रसिद्ध पंजाबी/ सिक्ख स्वतंत्रता सेनानियों ने इस जेल की यातनाएं सहन की थीं, जिनमें स. सोहन सिंघ भकना, स. गुरमुख सिंघ, स. गुरदित्त सिंघ, स. हरनाम सिंघ टुंडीलाट और स. करतार सिंघ झब्बर का नाम प्रमुख तौर पर लिया जा सकता है।

४. विनायक दामोदर सावरकर की जेल कोठरी को विशेष तौर पर उभारा गया है, जबकि अन्य किसी भी कैदी की जेल कोठरी से सबन्धित कोई निशानी मौजूद नहीं है।

५. शाम को ६ बजे से लेकर ७ बजे तक और ७ बजे से ८ बजे तक जेल परिसर में लाईट एंड साउंड के दो शो दिखाए जाते हैं। स्वतंत्रता सेनानियों पर हुए ज़ुल्मों की दास्तान का प्रदर्शन करने वाला यह शो यहाँ पर आने वालों को बहुत प्रभावित करता है। बड़ी संख्या में लोग इसे देखने आते हैं। इस शो में भी पंजाब के स्वतंत्रता सेनानियों का कोई ज्यादा ज़िक्र नहीं किया जाता।

६. २ मई, २०१७ ई. को शिष्टमंडल पोर्ट ब्लेयर के लेफ्टिनेंट गवर्नर डॉ. जगदीश मुखी से मिलने के लिए राजभवन गया। यह मीटिंग बहुत ही सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई। लेफ्टिनेंट गवर्नर की पृष्टभूमि पंजाब से सबन्धित है और उन्होंने शिष्टमंडल के विचारों को बड़े ध्यान से सुना। उन्होंने कहा कि वे पोर्टब्लेयर की तीन सड़कों के नाम स. भगत सिंघ, श्री मदन लाल ढींगरा और डॉ. दीवान सिंघ कालापानी के नाम पर रखने का मन बना चुके हैं। शिष्टमंडल के सदस्यों ने उन्हें आग्रह किया कि सेलुलर जेल की गैलरियाँ और लाईट एंड साउंड कार्यक्रम में पंजाबियों और विशेष तौर पर सिक्खों द्वारा आज़ादी के आंदोलन के लिए दी गई कुर्बानियों और सहे गए ज़ुल्मों को भी योग्य स्थान व सम्मान दिया जाना चाहिए। गवर्नर साहब ने कहा कि वे इस दिशा में जल्दी ही आवश्यक कार्यवाही कर पंजाबियों द्वारा आज़ादी के आंदोलन में दिए गए योगदान को दुनिया के सामने पेश करेंगे।

स. बख़तावर सिंघ आज़ादी से पहले से पोर्टब्लेयर में रह रहे हैं। पुलिस की नौकरी से रिटायर होने के पश्चात् उन्होंने स्थानीय जारवां कबीले के साथ भारत सरकार का पहली बार संबन्ध स्थापित करने में विशेष योगदान दिया है। स. बख़तावर सिंघ ने समाज-सेवा और लोक-कल्याण के कार्यों में अपना विशेष स्थान

बनाया है। २००५ ई. में इनका निधन हुआ था। शिष्टमंडल ने गवर्नर साहब को इस शख़्स की सेवाओं को मान्यता देने और इसकी याद में उचित यादगार स्थापित करने की विनय भी की।

७. मार्च १९४२ ई. से लेकर अक्तूबर १९४५ ई. तक द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों का इस टापू पर कब्ज़ा रहा है। इस समय के दौरान उन्होंने भारतीयों पर बहुत अत्याचार किए थे। डॉ. दीवान सिंघ कालापानी को ८२ दिन सेलुलर जेल में कष्ट देकर शहीद किया गया था। उनसे सबन्धित कोई भी जानकारी इस जेल में से प्राप्त नहीं होती।

४४ निर्दोष भारतीयों को जापानियों ने अंग्रेज़ों के जासूस कह कर हमफरीगंज में गोली मार दी थी। शहीद होने वाले ये शख़्स इंडियन इंडीपेंडेंस लीग से सबन्धित थे। इन्हें अभी तक स्वतंत्रता सेनानियों का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका। यहाँ पर शहादत प्राप्त करने वालों में स. पोखर सिंघ चावला, स. बचन सिंघ, स. बख़शीश सिंघ, स. बलवंत सिंघ, स. बंता सिंघ, स. दलीप सिंघ आदि १९ सिक्ख शामिल थे जिनके नाम वहां पर मौजूद यादगार पर उकरे हुए हैं।

८. शिष्टमंडल के सदस्यों ने पोर्ट ब्लेयर के दो गुरुद्वारा साहिबान का सर्वे भी किया था। इनमें से एक पुलिस गुरुद्वारा और दूसरा गुरुद्वारा डॉ. दीवान सिंघ कालापानी के नाम पर सुशोभित है। ये दोनों गुरुद्वारा साहिबान आज़ादी मिलने से पहले के बनाए हुए हैं।

डॉ. दीवान सिंघ कालापानी वाले गुरुद्वारे के सामने डॉ. साहब की प्रतिमा सुशोभित है, जिसका उद्घाटन २ अगस्त, २०१२ ई. को पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल ने किया था। इसके साथ ही डॉ. दीवान सिंघ कालापानी के जीवन और देश की आज़ादी के प्रति उनकी भावना का सांकेतिक पत्थर लगा हुआ है, जिस पर लिखा हुआ है— "अंग्रेज़ों ने आज़ादी नहीं दी, जापानी भी नहीं देंगे।" इस गुरुद्वारे के साथ ही एक स्कूल भी चलाया जा रहा है, जिसके बारे में स. बेअंत सिंघ ने विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि अन्य भाषाओं के साथ-साथ यहाँ पंजाबी भी पढ़ाई जाती है।

क्रमश : . . .

अकाली सरफ़रोशी : गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा

–स. गुरचरनजीत सिंघ लांबा*

"गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी॥'' गुरुद्वारा साहिब सिक्खों की श्वास-नलिका है, इसलिए एक पंथक निशाना अरदास के रूप में रोजाना याद किया जाता है वो है "गुरुद्वारिआं दी सेवा-संभाल का दान खालसा जी नूँ बखशो" यह प्रारंभिक पंथक अधिकार और कर्त्तव्य था जो हर सरकार की नज़रों में चुभने लगा । यह त्रासदी है कि प्रारंभ से ही समय की सरकारें गुरुद्वारा प्रबंध को अपने अधीन रखने के लिए हर साधन इस्तेमाल करती रही हैं। इसके लिए सरकारों को जितना भी ज़ुल्म-अत्याचार करना पड़ा, इसमें उन्होंने कोई कंजूसी नहीं की। इसी शृंखला में अंग्रेज़ शासन-काल में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान गुरुद्वारा गुरु का बाग, गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो, गुरुद्वारा पंजा साहिब, गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब, गुरुद्वारा तरनतारन साहिब आदि के मोर्चों में सिंघों ने जो कुर्बानियां दीं, वे रक्त-रंजित सिक्ख इतिहास के सुनहरी पृष्ठ हैं। इन सबमें मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग एक खास स्थान रखता है। इसमें पंथ ने अपना आप कुर्बान कर चढ़दी कला के साथ फतहयाबी हासिल की।

"न ओहि मरहि न ठागे जाहि॥ जिन कै रामु वसै मन माहि।।'' यहाँ वाहिगुरु का एक अदृश्य करिश्मा भी हुआ। सिक्ख जीवन का हर काल धर्म के अधीन रहकर जीता है। इसे अलग-अलग ढंग से श्रेणीबद्ध नहीं किया जा सकता कि यह उसका निजी जीवन है, यह व्यापारिक जीवन है, यह सामाजिक जीवन है आदि-आदि। जब सिक्ख गुरुद्वारों की सेवा-संभाल की जद्दोजहद करता है तो यह भी धर्म-युद्ध ही माना जाता है। जब गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान सिक्ख जान हथेली पर रख कर चल रहे थे और फिरंगी सरकार व उसके पिट्ठू पराजय की लड़ाई लड़ रहे थे, तो महात्मा गांधी ने सिक्खों को राय दी कि " आप इस गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को फ़िलहाल रोक कर देश की आज़ादी की लहर के लिए काम करो। जब देश आज़ाद हो गया तो गुरुद्वारे अपने आप ही आज़ाद हो जाएंगे।" यह परमात्मा की अपार रहमत हुई कि हमारे बुज़ुर्ग महात्मा गाँधी के इस झाँसे में नहीं आए। यह सरलता से अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि ऐसा हो जाता तो क्या गुरुद्वारे पंथ के प्रबंध के अधीन आ जाते? शब्दकोशों में अंग्रेज़ी का अर्थ छुरी, तलवार या कैंची किया गया है, जो अंगों के टुकड़े कर देती है। इसी अर्थ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने भी इसका वर्णन किया है— "अंगरेज़ी गहि कै छुरी ता की ग्रीव तकाइ॥ तनिक दबाई इह दिसा उहि दिसि निकसी जाइ॥ १३॥" (दसम ग्रंथ साहिब) अंग्रेज़ों पर यह बात पूरी तरह

*New Jersey. USA. Mo: +1 9736990950 Email: santsipahi@gmail.com

से उपयुक्त बैठती है। देश-विभाजन के बाद की सरकारों ने अंग्रेज़ों वाला यही व्यवहार बरकरार रखा।

जब गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा आरंभ हुआ तो यह सरकारी घटनाक्रम चल रहा था। सरकार महंतों की सहायता हेतु आ खड़ी हुई और कह रही थी कि सिक्ख उनकी सम्पत्ति पर ज़बरदस्ती काबिज हो रहे हैं। इसके बाद अत्याचार की जो आँधी चली उसने न केवल पूरे देश बल्कि संसार भर में हाहाकार मचा दी। इंग्लैंड से आए पादरी, विभिन्न धर्मों के अगुआ और राजनैतिक नेता इस दृश्य को देख कर काँप उठे।

बी. टी. द्वारा इस मोर्चे में केवल कील जड़ी लाठियों से ही नहीं पीटा जाता था, बल्कि हंटर मारना, दाढ़ी-केश उखाड़ना, ज़ख़्मी सिंघों को घसीट कर तालाब और नहरों में फेंकना, गुप्तांगों को चोट पहुंचाना आदि सभी वहिशीयाना कृत्य किये गए। सेंट्रल माझा दीवान के जत्थे के साथ अंधाधुंध मार-कुटाई की गई। इसके बाद सत्ता के नशे में अंधे बी. टी. ने कहा कि "बताओ! आपका गुरु गोबिंद सिंघ कहाँ है?'' यह कह कर मानों उसने अपनी मौत के वारंट पर ख़ुद दस्तख़त कर दिए हों।

श्री अमृतसर साहिब की ख़ैरदीन की मस्जिद में एक बहुत बड़ा जलसा आयोजित किया गया, जहाँ मोर्चे की सफलता और सिंघों की चढ़दी कला के लिए दुआ माँगी गई। कोई वर्ग ऐसा नहीं रहा जिसने अंग्रेज़ों और बी. टी.की भर्त्सना न की हो।

इस मोर्चे के दौरान एक और प्रत्यक्ष बख्शिश हुई, जब सिंघों पर ज़ुल्म हो रहा था तब उन्हें 'श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाज़' के प्रत्यक्ष दर्शन हुए थे।

श्री अकाल तख़्त साहिब से हर हाल में शांतमयी रहने की अरदास कर, सिर पर कफन बाँध कर गुरु के सिक्ख प्रस्थान किया करते थे। उनके गातरे— श्री साहिब पहने होते थे। उनके सिर पर लाठियां बरसती थीं। आम तौर पर देखा जाता है कि अगर किसी को कोई डंडा भी मारे तो पीड़ित के हाथ हिलेंगे, हाथ उठेंगे भी। परन्तु, हैरानी की इंतहा तब हुई कि उन ज़िंदा शहीदों (पीड़ितों)के हाथ जुड़े हुए हैं। सिर पर लाठियां बरस रही हैं, सिर फूट गया है, ख़ून बह रहा है, परन्तु उनके हाथ अविचल हैं। ये कैसे हठी लोग थे, जिनके जीवन-संघर्ष को रोज़ अरदास में याद किया जाता है!

तैनूं माण है जाबरा गोलियां 'ते,
जेल्हां, चक्कियां ते तेज कातियां 'ते।
सानूं माण है सब्र दी तेग उत्ते,
तीर झलणे वालियां छातियां 'ते।

(कवि विधाता सिंघ तीर)

लाठियों की मूसलाधार वर्षा से सिंघ धरती पर गिर पड़ते थे। उन पर घोड़े दौड़ा कर उन्हें रौंदा जाता था। यह है असली चेहरा सभ्यक कहलाने वाले गोरों का। दूसरी तरफ एक अकाल के उपासक, धन्य अकाली! अगर ऐसे अकालियों के किरदार का तिनका-मात्र भी आधुनिक अकालियों के अंदर आ जाए तो कोई आशंका नहीं कि पंथ तेरे दीआं गूंजां सारे संसार में न पड़ें! रक्षक खुद अकाल है अकालियों का। अकाली किरदार का प्रतिनिधित्व उस समय ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द ने किया है :

अक्खां खोल्हो ढिल्लड़ वीरो,
आ गया फेर अकाली जे!
झंडा फड़िआ हत्थ सच्च दा,
जोत मारदी लाली जे!
अक्खीं वेख बेअदबी हुंदी,
वीर ना कदी सहार सके।
जिस ने सीस तली 'ते धरिआ,
उस नूं कोई ना मार सके।. . .
जीउंदे होण अकाली वरगे,
कौम कदी ना हार सके।
इक अकाली बाझों यारो,
बण गई कौम पराली जे!
अक्खां खोल्हो ढिल्लड़ वीरो,
आ गया फेर अकाली जे!

अगस्त १९२२ ई. में गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा लगा। यहाँ से गुरु के लंगर के लिए ईंधन हेतु लकड़ियां ले जाई जाती थीं। गुरुद्वारा साहिब के महंत की रिपोर्ट पर सरकार पूरी बेशर्मी के साथ बीच में आ गई। फिर शुरू हुआ श्री अकाल तख़्त साहिब से गुरुद्वारा गुरु का बाग की तरफ जाने वाले जत्थों पर अत्याचार का सिलसला। सिंघों को बेतहाशा और वहशीयाना ढंग के साथ लाठियों से पीटा जाता, रायफलों के बट्ट मारे जाते। सिंघ अविचल खड़े 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' के अलावा और कुछ न बोलते। इस समय अखबारों के संपादक, हकीम अज़मल ख़ान तथा अन्य राजनैतिक नेता मौके पर पहुँच कर नम आँखों के साथ यह सब कुछ देखते हुए लौटते। 'ज़िमींदार' के संपादक मौलाना ज़फर अली और लाला मेला राम वफ़ा ने कवितायें लिखीं। पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा कि प्रत्येक लाठी ब्रिटिश सरकार की जड़ों पर वार साबित होगी। १२ सितम्बर को पादरी सी. एफ. एंड्रूज ने उपस्थित होकर यह सारा दृश्य देखा और कई लेख लिखे। उसने पुकारते हुए कहा कि, "काली पगड़ी वाले इन निर्दोष निहत्थे सिक्खों पर पीतल की गांठों वाली लाठियों द्वारा कायराना हमला किया जा रहा है।" उसने सरकार को भी लिखा कि "मैं ये लाठियां ईसा मसीह पर बरसती हुई महसूस कर रहा हूँ।" ये वे अकाली वीर थे जिनकी कुर्बानी से अकाली दल अपने पैरों पर खड़ा हुआ। पंडित लाला मेला राम वफ़ा ने उस समय लिखा था :

तेरी कुर्बानियों की धूम है आज इस ज़माने में,
बहादुर है अगर कोई तो वो तू अकाली है!
तेरा जिसने मुकद्दम पैकार ईसार बेपाया,
तेरा क़ब है मुनव्वर फख़्र-ए-जजबात आली है।
बड़ी तारीफ के काबिल तेरी हिम्मत-ओ-जुरअत,
जद्दोजहद आजादी में तूने जान डाली है।
किया है जिन्दा तूने रिवायते गुज़श्ता को,
सितमगरों से तूने कौम की इज्जत बचा ली है।
ज़ालिमों की लाठियां तूने सही सीना-ए-सपर होकर,
लुत्फ इस पे कि लब पे शिकायत है न गाली है।

इस अकाली लहर में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी गिरफ़्तारी दी और नाभा जेल में कैद काटी। पंडित नेहरू ने लिखा कि अकालियों के इस महान कार्य में योगदान देकर वे फख़्र महसूस कर रहे हैं। परन्तु, इतिहास केवल अपनी चाल ही नहीं चलता बल्कि जब सत्ता की बागडोर पंडित नेहरू के हाथ आई तो उसके द्वारा गुरुद्वारा गुरु का बाग

जैसा ज़ुल्मी घटनाक्रम सिक्खों पर ४ जुलाई, १९५५ ई. को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब में पुलिस भेज कर, परिक्रमा में आँसू गैस के गोले फेंक कर, गोलाबारी करवा कर और फिर १२ जून, १९६० ई. को दिल्ली की सड़कों पर निहत्थे सिक्खों का ख़ून बहा कर दोहराया गया। फर्क सिर्फ़ इतना था कि सिक्ख वही थे, मगर हाकिम बदल चुके थे।

अंग्रेज़ हुकूमत के प्रशासक बी. टी. की लाठियों के जो अत्याचार, ज़ुल्म, यातनाएं गुरू रूप ख़ालसा ने अपने शरीर पर झेलीं, उसने १८वीं सदी के इतिहास को पुन: सामने ला दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापि से लेकर बाकायदा कानूनी मान्यता प्राप्त होने तक का यह समय बहुत ही भारी था। सिंघों के धैर्य को परखने और कुचलने के लिए सरकार ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। मुद्दा सिर्फ़ इतना था कि क्या गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन से लंगर के लिए लकड़ियां ले जाने का हक सिक्खों को है या नहीं।

उस समय हुए अत्याचार को पूरे विश्व ने देखा और हर एक की आँखें नम हो गईं। पादरी सी. एफ. एंड्रयूज, जवाहर लाल नेहरू से लेकर प्रत्येक ने हुकूमत की भर्त्सना की। इस मोर्चे के दौरान एक नौजवान को बी. टी., दो गोरखा सिपाहियों से निर्दयतापूर्वक पिटवा रहा था। अचानक उस नौजवान ने उन दोनों सिपाहियों को अपनी बगल में दबोचा और बी. टी. के पास ले जाकर कहने लगा कि श्री अकाल तख़्त साहिब पर की गई अरदास की मर्यादा की बात न होती तो अभी पता चल जाना था।

अकालियों की कुर्बानियों और किरदार से प्रभावित होकर उस समय मद्रास के जी. ए. सुन्दरम् ने अंग्रेज़ी में एक किताब 'गुरु का बाग सत्याग्रह' लिखी। इसमें स्वतंत्रता सेनानी हरेन्द्रनाथ चटोपाध्याय ने एक नज़म लिखी— साँग ऑफ द अकालीज़'। इसमें कहा है कि इस मोर्चे में सिंघों के शरीर नहीं बल्कि उनकी रूहें लड़ रही थीं।

THE SONG OF THE AKALIS.

Do all you can ! ... We shall not budge an inch.
For we have sworn to battle with our soul
Against your lifeless weapons, nor shall flinch.
From our inviolate vow of self-control,
Our bodies ? ...Nay! they are but mortal clay.
Insensible to hurt when once the proud,
Immortal spirit boldly casts away.
Despicable fear that clothes her like a cloud.
Thus we in thousands offer up our limbs
For you to trample on in helpless wrath
Our souls exulting chant victorious hymns
While with our blood you paint

your shadowy path
With the soul's laughter we defy your sword!
With the soul's freedom we defy your chains !
Come I let our blood in sacred streams be poured To wash away a century of stains.
What will you do to us who know the splendour
Of suffering for our holy Motherland ?
What can you do to us, whose faith can render
The fiery weapon powerless in your hand ?

इन सब ज़ुल्मो-सितम का दोषी था रियासत पटियाला के गाँव चड्डा का निवासी पुलिस कप्तान बी. टी.। बी. टी. की दुश्मनी उसके रिश्तेदार काका सिंघ के साथ थी।

अब समय आ गया बी. टी. से बदला लेने का। बब्बर अकाली करतार सिंघ छीनावाल, भोला सिंघ लोहाखेड़ा, कुंढा सिंघ गाज़ियाना और फ़ज़ला घुम्मण ने पुलिस की वर्दी पहनी और बी. टी. के दुश्मन काका सिंघ को साथ लिया। उन्होंने काका सिंघ को घसीटते हुए और मारपीट करते हुए उसे बी. टी. की कोठी ले जाकर उसके पैरों में ला फेंका। काका सिंघ के कहा, साहिब के पैर पकड़ कर माफी मांगो! काका सिंघ ने जब बी. टी. के पैर पकड़े और उसे उठा कर पटक दिया। तभी उन सिंघों ने गोलियों से बी. टी. को छलनी कर दिया।

अब बारी थी बी. टी. के कातिलों को सम्मान प्रदान करने की। बाबा छीनावाल और बाबा लोहाखेड़ा उम्र कैद काट कर रिहा हुए तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २७ नवंबर, १९५९ ई. की महासभा में इनकी प्रशंसा की और प्रस्ताव पारित किया, जो 'शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का पचास साला इतिहास' के पुष्ठ ३०४ पर अंकित है :—

१. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की यह महासभा बाबा करतार सिंघ छीनावाल और बाबा भोला सिंघ लोहाखेड़ा ज़िला संगरूर की उस सेवा की प्रशंसा करती है कि जो उन्होंने अकाली लहर के समय गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के मुख्य दोषी बी. टी. के कत्ल के दोष में उम्र कैद काट कर की है और कैद में से वे अभी रिहा हुए हैं।

२. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इन देश-भक्तों को खुली सहायता प्रदान करे ताकि ये लोग अपनी बकाया ज़िंदगी सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें।

समय बदल गया, पात्र बदल गए, मगर पंथक हालात नहीं बदले। अकाली लहर और विशेषतया गुरुद्वारा गुरु का बाग के महान योद्धांओं को याद करते हुए हमारा फर्ज बनता है महान शब्द 'अकाली' से तिनका-मात्र गुण हासिल करने का और गुरुद्वारों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी हस्तक्षेप को रोकने का।

भारत की स्वतंत्रता में सिक्खों की भूमिका का वर्णन

–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

विश्व-पटल पर सिक्ख धर्म की स्थापना एक अद्भुत, महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी घटना है। सिक्खों में शुरू से ही स्वाभिमान, आत्मसम्मान, परोपकार, सेवा, समर्पण, कुर्बानी, स्वतंत्रता जैसी भावनाएं कूट-कूटकर भरी हुई हैं। सिक्ख कौम सदा स्वतंत्र प्रवृत्ति की रही है और इसने किसी भी तरह की परतंत्रता— धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, स्वीकार नहीं की है। सिक्ख कौम हर तरह की स्वतंत्रता के लिए हमेशा संघर्ष करती रही है। इसमें देश-प्रेम एवं मानव-प्रेम की कोई कमी नहीं है।

सिक्ख धर्म के संस्थापक जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समय के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्रूर शासकों की तानाशाही, बेईमानी, नाइंसाफी का ज़िक्र पूरी निडरता के साथ अपनी बाणी में किया है। उन्होंने जाति, वर्ण, धर्म, वर्ग पर आधारित भेदभाव एवं ऊंच-नीच को भी बयान किया है। उन्होंने संपूर्ण संसार के लिए एक परिवर्तनकारी व क्रांतिकारी तथा प्रकृतिवादी मार्ग का निर्माण किया है।

सिक्ख धर्म के प्रचार व प्रसार से धर्मां एवं दुष्ट शासक बेचैन हो उठे थे। उन्होंने अपनी सत्ता को खतरे में पड़ी देख सिक्ख धर्म और गुरु साहिबान का ज़ोरदार विरोध करना शुरू कर दिया। उनकी क्रूरता के कारण ही पांचवें पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी को निर्दोष होने पर भी शहादत देनी पड़ी। भारत के इतिहास में यह प्रथम शहादत थी, जो किसी महापुरुष ने सच्चाई, स्वतंत्रता तथा धर्म की रक्षा के लिए दी। इसके बाद छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण कर श्री अकाल तख़्त साहिब की सृजना की। उन्होंने अपने अनुयायियों को शस्त्रबद्ध कर देश-धर्म की रक्षा हेतु सेना का गठन किया। उस समय के मुगल शासकों के साथ युद्ध किए और विजय प्राप्त की। फिर अन्यायी एवं अत्याचारी बादशाह जहांगीर ने उनके स्वतंत्र जीवन-अभियान को देखते हुए उन्हें ग्वालियर के दुर्ग में नज़रबंद कर दिया। गुरु जी ने वहां पर पहले से कैदी बनाए गए बावन हिंदू राजाओं को अपने साथ रिहा (आजाद) करवाया, जिससे वे 'बंदीछोड़ दाता' कहलाए।

सिक्ख धर्म की परंपरा व विरासत को और समृद्ध करते हुए नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी ने देश-कौम की स्वतंत्रता, मानवाधिकारों की रक्षार्थ लासानी शहादत दी।

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर—१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

उन्होंने अपनी महान शहादत से जुनूनी व कट्टरवादी औरंगजेब के जुल्म-ओ-जब्र का मुंहतोड़ जवाब दिया।

इसी श्रृंखला में साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा परिवार सहित दी गई कुर्बानियों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती सिक्ख गुरु साहिबान से प्रेरणा व मार्गदर्शन लेकर आम लोगों की भलाई एवं स्वतंत्रता के लिए सन् १६९९ ई. में आज़ाद पंथ 'खालसा पंथ' की सृजना की। उन्होंने दबे-कुचले, प्रताड़ित लोगों में ऐसी अद्भुत शक्ति का संचार किया कि वे अन्यायियों तथा अत्याचारियों को कड़ी टक्कर देने, सबक सिखाने, धूल चटाने के काबिल बन गए। दशमेश पिता जी को देश, कौम, मानवीय स्वतंत्रता के लिए बेशक अनेक कठिनाइयों-दुश्वारियों का सामना करना पड़ा, फिर भी वे पीछे नहीं हटे। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने क्रूर व अत्याचारी मुगल साम्राज्य को मिट्टी में मिलाकर स्वतंत्र लोकराज्य की स्थापना की। दबे-कुचले लोगों को खालसा राज्य में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया। उनमें ऐसी योग्यता भर दी कि वे सफल शासक व प्रशासक सिद्ध हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादुर के ऐतिहासिक निर्णय ने भूमिहीनों को भूमि-मालिक, संपत्तिहीनों को संपत्ति के मालिक बना दिया। जो रंक था, वो भी राजा बन गया।

यह पहली बार था कि सिक्ख गुरु साहिबान एवं सिक्ख वीरों की सुयोग्य आगवानी में पंजाब के पीड़ित दलित तथा पिछड़े लोगों ने स्वतंत्रता का आनंद एवं सुख प्राप्त किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने जो उत्कृष्ट कार्य किया वो था कि सिक्ख एक बार फिर से संघर्ष के मार्ग पर चल पड़ें। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत व घल्लूघारों के बाद से लेकर सिक्ख मिसलों का समय, महाराजा रणजीत सिंघ का शासन-काल, कूका लहर, बब्बर अकाली लहर, सिंघ सभा लहर, गदर लहर आदि का समय भी वास्तव में भारत की स्वतंत्रता हेतु किए गए सिक्खों के संघर्ष का ही इतिहास है। सन् १९४७ में भारत को मिली स्वतंत्रता में सिक्खों ने जो कुर्बानियां दी हैं, वे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हैं।

भारत की स्वतंत्रता का संग्राम नि:संदेह देश के प्रत्येक राज्य, रियासत में विभिन्न समुदायों व संगठनों द्वारा चलाया जा रहा था, परंतु जब अंग्रेज़ों ने महाराजा रणजीत सिंघ के साम्राज्य को कुटिल नीति द्वारा छीन लिया, उस समय से ही सिक्खों में भारत को अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद करवाने की इच्छा और अधिक बलवती हो उठी थी। उन्होंने अपना संघर्ष तेज कर दिया। उनका संघर्ष सबसे लंबा व कुर्बानियों से भरा सिद्ध हुआ। सिक्ख इतिहास तथा अनेक शहीद सिक्खों की कुर्बानियों से ऊर्जा व प्रेरणा लेकर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति में भरपूर योगदान दिया। इस आज़ादी की लड़ाई में सबसे अधिक कुर्बानियां पंजाब के हिस्से में ही आईं।

ब्योरा प्रस्तुत है :—

१. फांसी मिली : ९३ सिक्ख व २८ गैर-सिक्ख

२. उम्र-कैद : २१४७ सिक्ख व ४९९ गैर-सिक्ख

३. जलियां वाला बाग के शहीद : ७९९ सिक्ख व ५०० गैर-सिक्ख

४. बजबज घाट के शहीद : ६७ सिक्ख व ४६ गैर-सिक्ख

५. कूका लहर के शहीद : ९१ सिक्ख

६. अकाली लहर के शहीद : ५०० सिक्ख

सिक्खों द्वारा किए गए निरंतर स्वतंत्रता-संग्राम के संघर्ष का अवलोकन करने हेतु इतिहास के और भी पृष्ठों को पढ़ना होगा। प्रथम विश्व युद्ध से पहले जब भारत को विदेशी साम्राज्य के चंगुल से मुक्त करवाने का विचार भारतीय लोगों के मन में पनप रहा था, तब सिक्खों ने आज़ादी की लहर की आगवानी आगे बढ़कर की। कामागाटामारू की घटना का उल्लेख भी होना चाहिए। एक अन्य घटना में वैनकूवर (कनाडा) से सन् १९१३ ई. में दो सौ सिक्खों का जत्था, जिसमें दो या तीन गैर-सिक्ख भी थे, समुद्री मार्ग द्वारा रवाना हुआ। ये सभी लोग गुरु साहिबान द्वारा दरसाए गए मार्ग पर चलने वाले मेहनती, किरती और किसान थे। उनमें दृढ़ता, साहस, विश्वास की कोई कमी नहीं थी। इन सबकी योजना भारतीय सेना में क्रांतिकारी गतिविधियां पैदा कर बर्तानवी सरकार को अस्थिर करना था। उनमें से ज्यादातर को अंडेमान निकोबार (कालापानी) में ता-उम्र की कैद की सज़ा देकर भेज दिया गया। वे वहीं पर मृत्यु को प्राप्त हुए।

आज़ादी का संग्राम जारी रहा। अंतत: सन् १९४७ में भारत को आज़ादी मिल गई, किंतु यह टुकड़ों में बंटी आधी व अधूरी आज़ादी थी। बंगाल व पंजाब का बंटवारा हो गया। सबसे ज्यादा माली व जानी नुकसान पंजाबियों का हुआ। कभी सोचा भी न था कि गुरु नानक पातशाह का पंजाब दो हिस्सों में बंट जाएगा।

सिक्ख समुदाय की शानदार व उत्कृष्ट परंपराओं एवं रिवायतों का सैद्धांतिक तथा ऐतिहासिक महत्व है। गुरु साहिबान तथा शहीदों के फलसफे एवं शहादतों से सिक्ख समुदाय हमेशा उर्जा, उत्साह, प्रेरणा, आगवानी प्राप्त करता रहा है और करता रहेगा। मानव के मूल अधिकारों— न्याय, सच, आत्मसम्मान, स्वाभिमान, समानता, समाजवाद तथा हर तरह की स्वतंत्रता की प्राप्ति व रक्षा के लिए सिक्ख समुदाय संघर्ष करता रहा है, आगे भी करता रहेगा, निर्धनों व असहायों का सहारा बनता रहा है और बनता रहेगा। भारत की स्वतंत्रता में सिक्खों द्वारा दिए गए योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, झुठलाया नहीं जा सकता।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के सेवा-नियमों से सम्बन्धित समिति का गठन

श्री अमृतसर साहिब : २६ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के सेवा-नियमों के सम्बन्ध में ३४ सदस्यीय समिति का गठन किया है। मुख्यालय से जारी एक प्रेस बयान के माध्यम से एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि इस समिति में सिंघ साहिबान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब से एक नुमाइंदा, प्रधान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, शिरोमणि अकाली दल का एक नुमाइंदा, बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा प्रमुख दमदमी टकसाल और प्रधान संत समाज, बाबा निहाल सिंघ हरियां वेलां प्रमुख तरना दल, बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी प्रमुख शिरोमणी पंथ अकाली बुड्ढा दल, बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ प्रमुख दल पंथ बाबा बिधी चंद जी, पदमश्री बाबा सेवा सिंघ कार सेवा खडूर साहिब, बाबा कशमीर सिंघ प्रमुख संप्रदाय कारसेवा भूरीवाले, बाबा तेजा सिंघ खुड्डा कुराला निर्मले संप्रदाय, महंत रमिंदर दास उदासीन संप्रदाय, महंत प्रितपाल सिंघ मिट्ठा टिवाणा सेवापंथी, बाबा सेवा सिंघ रामपुर खेड़ा, प्रधान चीफ़ ख़ालसा दीवान श्री अमृतसर साहिब, केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा चंडीगढ़ का एक नुमाइंदा, प्रसिद्ध कथावाचक भाई साहिब ज्ञानी पिंदरपाल सिंघ, गुरबाणी-व्याकरण के ज्ञाता ज्ञानी साहिब सिंघ शाहबाद मारकंडा, भाई महिंदर सिंघ गुरु नानक निष्काम सेवक जत्था यूके, महंत मनजीत सिंघ जम्मू कश्मीर, बीबी इंदरजीत कौर प्रमुख भक्त पूरन सिंघ पिंगलवाड़ा सोसायटी, डॉ. करमजीत सिंघ वाइस चांसलर गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी श्री अमृतसर साहिब, डॉ. प्रितपाल सिंघ वाइस चांसलर श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी श्री फ़तहिगढ़ साहिब, सिक्ख विद्वान डॉ. बलकार सिंघ पटियाला, डॉ. परमवीर सिंघ पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, डॉ. अमरजीत सिंघ गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी श्री अमृतसर साहिब, डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी प्रिं. ख़ालसा कॉलेज सी. से. स्कूल श्री अमृतसर साहिब सिक्ख विद्वान डॉ. केहर सिंघ, सिक्ख विद्वान डॉ. हरभजन सिंघ देहरादून, ज्ञानी बलजीत सिंघ प्रिं. साहिबज़ादा जुझार सिंघ सिक्ख मिशनरी कॉलेज चौंता, सिक्ख विद्वान डॉ. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा) अमेरिका, डॉ. जतिंदरपाल सिंघ (उप्पल) आस्ट्रेलिया, स. राजबीर सिंघ कनाडा, स. इंदरपाल सिंघ (चड्ढा) गुरु गोबिंद सिंघ स्टडी सर्कल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण (कोआरडिनेटर) को शामिल किया गया है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि बहुत-सी संप्रदाओं, जत्थेबंदियों और विद्वानों ने पहले ही अपने सुझाव लिखित रूप में भेज दिए हैं। इनमें तख़्त सचखंड श्री

हजूर अबिचल नगर साहिब, नांदेड़, दल खालसा, अखंड कीर्तनी जत्था, पंथक तालमेल संगठन, सिक्ख कौंसिल यूके, सुखमनी साहिब सेवा सोसायटी, शिरोमणि खालसा पंचायत, सिंघ सभाओं सहित कई जत्थेबंदियां व बड़ी संख्या में सिक्ख विद्वान शामिल हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा अब इस सम्बन्ध में ३४ सदस्यीय समिति गठित कर दी गई है, जो अपनी राय-रिपोर्ट देगी।

जून १९८४ के घल्लघूारे के समय सरकार के ज़ुल्मों को प्रदर्शित करती सचित्र पुस्तक एडवोकेट धामी द्वारा जारी

श्री अमृतसर साहिब : ३ जुलाई : जून १९८४ में तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर किये गए फ़ौजी हमले के समय सिक्खों के हुए भारी नुकसान को प्रदर्शित करती तसवीरों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने एक बहुआकारी पुस्तक के रूप में जारी किया। इस अवसर पर बात करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि जून १९८४ का घल्लूघारा सिक्ख इतिहास का एक दुखदायी अध्याय है। उन्होंने कहा कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने सिक्खों के पवित्र गुरुधामों पर फ़ौजी हमला कर सिक्ख मानसिकता को गहरे ज़ख़्म दिये हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने सिक्खों के धार्मिक खजाने को संभाले बैठी सिक्ख रेंफ्रेंस लायब्रेरी के कीमती दस्तावेज़ों और ऐतिहासिक वस्तुओं को भी बड़ा नुकसान पहुँचाया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि हमले से कई दिन बाद तक सरकार ने कर्फ़्यू लगा कर संगत को श्री दरबार साहिब आने से रोके रखा, ताकि सरकार द्वारा किए ज़ुल्मों के निशान मिटाए जा सकें। सरकार के इन ज़ुल्मों की कुछ तसवीरें फोटोग्राफर स. सतपाल सिंघ दानिश ने संभाली थीं, जिन्हें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एक सचित्र पुस्तक के रूप में तैयार कर आज जारी किया है। इसमें दर्ज तसवीरें समय के हालात और सरकार द्वारा ज़ुल्मों को प्रदर्शित करती हैं। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय, सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी, श्री दरबार साहिब के सूचना केंद्र और सिक्ख अजायब घर में रखी जायेगी, ताकि संगत सरकार द्वारा सिक्खों पर किये गए ज़ुल्मों से अवगत हो सके। इसके अलावा इसका डिजीटाईजेशन करके भी विभिन्न माध्यम से संगत तक पहुँचाया जायेगा।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कल्याण, कार्यकारी समिति के सदस्य स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. परमजीत सिंघ ख़ालसा, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, भाई अजैब सिंघ अभ्यासी, स. अमृतपाल सिंघ कुलार, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), निजी सचिव स. शाहबाज़ सिंघ, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, सुप्रिंटेंडेंट स. निशान सिंघ, इंचार्ज स. जोगेशवर सिंघ, मैनेजर स. जतिंदरपाल सिंघ, अतिरिक्त मैनेजर स. इकबाल सिंघ मुखी आदि उपस्थित थे।

४ जुलाई, १९५५ ई. को श्री हरिमंदर साहिब पर हुए हमले की याद में समारोह आयोजित

श्री अमृतसर साहिब : ४ जुलाई : पंजाबी सूबा मोर्चे के दौरान तत्कालीन सरकार द्वारा ४ जुलाई, १९५५ को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब पर किये गए हमले की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में समारोह आयोजित किया गया। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी भाई जगरूप सिंघ के जत्थे ने गुरबाणी-कीर्तन किया और अरदास भाई बलविंदर सिंघ ने की। संगत को हुकमनामा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी परविंदरपाल सिंघ ने श्रवण करवाया।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी परविंदरपाल सिंघ ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समय-समय पर हुक्मरानों ने सिक्खों के केंद्रीय स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर हमला कर सिक्ख कौम को कमज़ोर करने के यत्न किये हैं। उन्होंने कहा कि पंजाबी सूबा मोर्चे के दौरान सिक्खों की आवाज़ को दबाने के लिए भी तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने ४ जुलाई, १९५५ ई. को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब पर हमला किया था, जिसे कौम भुला नहीं सकती।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने कहा कि सिक्खों के साथ सरकारों द्वारा हमेशा बेइंसाफ़ी की जाती रही है। भाषा के आधार पर गठित किए गए राज्यों के समय भी पंजाबियों के साथ भेदभाव किया गया। इसके विरोध में जब सिक्ख कौम ने पंजाबी सूबा मोर्चा लगाया तो सरकार द्वारा अपनी ताकत का दुरुपयोग करके अकाली योद्धाओं को जेल में बंद कर दिया गया। इसी के अंतर्गत सरकार ने पुलिस फोर्स भेज कर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की बेअदबी की, जो आज़ाद भारत में सिक्खों को भेदभाव व विभिन्नता का एहसास करवाने वाली थी। उन्होंने कहा कि सिक्खों ने हमेशा इस देश के लिए संघर्ष किया है, मगर सरकारों ने सिक्खों की जायज माँगों को सदा नजरंदाज किया है। इस दौरान ढाडी जत्थों ने भी संगत को सिक्ख इतिहास से अवगत करवाया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण, उपसचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, श्री दरबार साहिब के जनरल मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, सुप्रिंटेंडेंट स. निशान सिंघ, स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, मैनेजर स. राजिंदर सिंघ रूबी, स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. युवराज सिंघ, स. जसपाल सिंघ ढड्डे, स. गुरतिंदरपाल सिंघ कादियाँ, इंचार्ज स. जगजीत सिंघ, एक्सियन स. जतिंदरपाल सिंघ, स. अमनदीप सिंघ आदि उपस्थित थे।

गुरुद्वारा श्री कंध साहिब, बटाला

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

August 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-8-2025